Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८.३
६२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या ट.३ RA / ६२ आगत संख्या ३७३६३

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति स्मृति संग्रह

8.3,62
37363

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३६.२६२
२२-१२-६१



दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या ८.२
पुस्तक संख्या ६२
आगत पञ्जिका संख्या ३८,३६३

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति
भूतपूर्व उपकुलपति द्वारा पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को दो हज़ार पुस्तकें सप्रेम भेंट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विनोद-रत्न-माला' की आठवीं पुस्तक—

R8.3,RIS-S
37363

सत्याग्रह

(मौलिक, राजनैतिक उपन्यास)

लेखक

श्रीयुत ऋषभचरण

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति स्मृति संग्रह

प्रकाशक—

हिन्दी-पुस्तक-कार्यालय,

कूचा पातीराम,

देहली।

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

पहली बार } सन् १९३० ई० { मूल्य एक रुपया
सजि० सवा रुपया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक
हिन्दी-पुस्तक-कार्यालय,
कूचा पातीराम,
दिल्ली।

मुद्रक—
जे० बी० प्रिंटिंग प्रेस,
चाँदनी चौक,
दिल्ली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३६३६३
२२-१२-६१

कुछ

'सत्याग्रह' आपके हाथ में है।

कैसा है?—कैसा बना?—इस सम्बन्ध में प्रशंसा के शब्द सुनने की मुझे आशा नहीं है। कल्पना की उड़ान, भावों के प्रतिघात, घटना की विचित्रता—यह सब-कुछ ढूँढ़ने-वाले इसे पढ़ कर निराश होंगे;—अप्रसन्न भी हों—तो मुझे गिला नहीं।

मुझे यह स्वीकार करने में कुछ भी लज्जा नहीं है—कि मैंने इसे लिखती-बार वैसी किसी बात को मद्‌देनज़र नहीं रक्खा। सच कहूँ—तो कथानक-ही मैंने उपन्यास के उपयुक्त न समझा; न समझता हूँ।

मैंने तो उस संसार-पूज्य सूखे-सुकड़े गाँधी को एक बार लाहौर में देखा, और उसकी वह तस्वीर मेरे हृदय में अकस्मात् खुद गई।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर मैंने उसकी पूजा की, उसके कारनामे सुनें, उसकी पुस्तकें पढ़ीं।

और मानों उसे पढ़ लिया, समझ लिया, उससे वार्त्तालाप कर लिया।

उसके एक-एक शब्द में मैंने उसे प्रतिबिंबित पाया।—और 'दक्षिण-अफ्रीका के सत्याग्रह' में मैंने उसका व्यक्तित्व खूब उज्ज्वल और भक्-भक् चमकता देखा।

तब मैंने, बिना यह समझे, कि उपन्यास बनता है, या नहीं, एक ऐसी चीज लिखनी आरम्भ करदी, जो साधारण पाठक को पसन्द हो, उसकी बन सके, और वह 'उसके' व्यक्तित्व के एक मध्यस्थ वर्णन का मज़ा लूट सके। वह चीज़ क्या बन गई, कैसी बन गई, यह मुझे होश नहीं, पर मेरे मन-माफ़िक बन गई, यह देखकर मुझे हर्ष है।

औपन्यासिक हूँ; अतिशयोक्ति से बच कैसे सकता हूँ, और फिर—अंग्रेजों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं रखता हूँ—इसलिये कहीं-कहीं उनका चरित्र निर्बल होगया हो, तो यरवदा-तपोभूमि में विचरने-वाले मेरे वे भगवान् और निष्पक्ष पाठक मुझे माफ़ करें—माफ़ करें!

नई दिल्ली।
१ सितम्बर सन् १९३०

—ऋषभचरण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

प्रस्तावना

रक़बे के लिहाज़ से अफ़्रीका इतना बड़ा देश है—कि चार-पाँच हिन्दुस्तान आसानी से उसमें समा सकते हैं। दक्षिण-अफ़्रीका, अफ़्रीका के बिल्कुल दक्षिणी भाग को कहा जाता है। आज से पचास वर्ष पहिले दक्षिण-अफ़्रीका बिल्कुल वीरान पड़ा हुआ था। परन्तु जब से वहाँ के एक टुकड़े में सोने की खानों का पता लगा है, तब से बस्ती शुरू होगई, और आज जोहानस्बर्ग-नामक एक गुलज़ार शहर वहाँ आबाद है।

दक्षिण-अफ़्रीका में दो रियासतें हैं। एक अङ्गरेज़ी, दूसरी पोर्चूगीज़। पोर्चूगीज़ भाग, 'डेलागोआबे',

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान से जाते हुए दक्षिण-अफ्रीका का पहला बन्दर है। वहाँ से नीचे आने पर नेटाल पहली बृटिश रियासत है, जिसके बन्दर-स्थान का नाम 'पोर्ट नेटाल' या डरबन है। पीटर मारित्सबर्ग नेटाल की राजधानी है, जो डर्बन से ५०-६० मील दूर है। इससे आगे ट्रान्सवाल रियासत है, जिसमें सोने-हीरे की खानें हैं। इसकी राजधानी प्रिटोरिया है। जोहानस्बर्ग यहाँ से ३६ मील दूर है। ट्रान्सवाल के पश्चिम की ओर 'आरेञ्ज-फ्री-स्टेट', अथवा आरेञ्जिया रियासत आती है। कुछ आगे बढ़ने पर 'केप-कालोनी' की सरहद आ जाती है। इन चार अङ्गरेज़ी रियासतों के अलावा अफ्रीका का और भी बहुत-सा प्रदेश अङ्गरेज़ों के आधीन है, जहाँ पर वहाँ के आदि-निवासी रहते हैं।

दक्षिण-अफ्रीका में खेती खूब होसकती है, और अनेक भाग अत्यन्त उपजाऊ हैं। मकई बहुत पैदा होती है, जो वहाँ के हब्शियों का प्रधान भोजन है। साग-तरकारी और तरह-तरह के फलों की वहाँ खूब इफ़रात है।

सब से पहले अफ्रीका में कौन लोग बसते थे—यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। हाँ, जब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरोप-निवासी दक्षिण-अफ्रीका में गये, तो वहाँ हब्शी-लोग रहते थे। कहते हैं—जब अमरीका में दासत्व-प्रथा अपने ज़ोर पर थी, तो वहाँ के कुछ हब्शी भाग-कर दक्षिण-अफ्रीका में आ बसे थे। इस दृष्टि से हब्शी-लोग अफ्रीका के आदि-निवासी कहे जा सकते हैं। परन्तु सारे अफ्रीका में ५० लाख हब्शियों की आबादी है, जब कि इससे पचास-गुना आदमी वहाँ आसानी से रह सकते हैं।

हब्शी-जाति शरीर की मज़बूती के लिये संसार-प्रसिद्ध है, परन्तु फिर भी ये लोग इतने डरपोक होते हैं, कि एक गोरे का बच्चा पचास हब्शियों को आसानी से भगा सकता है। बात यह है—कि अभागे भारतीयों की तरह ये लोग भी निःशस्त्र कर दिये गये हैं। भाला फेंकने, और तीरन्दाज़ी में ये लोग निपुण हैं, पर वे सब इन बेचारों से छीन लिये गये हैं।

गोरों ने अबोध हब्शियों पर तरह-तरह के टैक्स लगाये हैं। यह क्यों ?—बात यह है—कि खानों में काम करने के लिये गोरों को नौकरों की ज़रूरत पड़ती है, और अगर उन पर ये व्यर्थ और अत्याचार-पूर्ण टैक्स न लादे जायँ, तो स्वाधीनता-प्रिय हब्शी खुले खेतों में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करने की बजाय भयङ्कर, बदबूदार, अँधेरी खानों में खून-पसीना एक करने को कैसे तैयार हों?—वहाँ, जीते-जी मानों क़ब्रों में जाकर ग़रीब हब्शी क्षय-आदि भयङ्कर, घातक रोगों के शिकार होते हैं, और-बिना-मौत मरते हैं।

अब डच अर्थात् वलन्दा-लोगों के आगमन का इतिहास भी सुनादें। आज से लगभग चार सौ साल पहले ये वलन्दा-लोग मलायी* गुलामों को साथ लेकर दक्षिण-अफ्रीका में आये। ये लोग बड़े वीर, लड़ाके, और साथ-ही-साथ कुशल कृषक भी थे, और उनके पास बन्दूक़-इत्यादि आधुनिक शस्त्रों का भी अभाव न था। जब उन्होंने देखा—अफ्रीका की अधिकांश भूमि उपजाऊ है, और यहाँ के निवासी साल का अधिकांश भाग आवारा-गर्दी और मटर-गश्ती में बिताते हैं—तो उन्होंने इन दक्षिण-अफ्रीका-वालों को अपना गुलाम बनाया, और खेती शुरू की।

धीरे-धीरे अंग्रेज़-प्रभुओं के चरण भी इस जगह

---

*ये मलायी जाति के मुसलमान हैं। मुख्य निवास-स्थान इनका केप-टाउन है। कुछ स्वतन्त्र व्यापार करते हैं, कुछ गोरों के नौकर हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचे। अंग्रेज़ों, और डच-लोगों की प्रकृति एक-सी होती है। दोनों-ही लालची, दोनों-ही स्वार्थी, और दोनों-ही कूटनीतिज्ञ!—अतएव विग्रह अनिवार्य था। दोनों ने बढ़ने की कोशिश की, दोनों ने ज़्यादा लोभ किया, और दोनों ने हब्शियों पर प्रभुत्व जमाने की कोशिश की। नतीजा इसका यह हुआ कि दोनों जातियाँ आपस में लड़ पड़ीं। खूब लड़ाइयाँ हुईं, खूब झगड़े हुए, खूब रक्त बहा, और मजूबा की पहाड़ियों पर अहंकारी अंग्रेज़ बुरी तरह पिटे, और हारे।

परन्तु यह मजूबा की पहाड़ी की हार अङ्गरेजों के दिलों में एक कसक की तरह रह गई। सन् १८९९ से १९०२ तक जो विख्यात बोअर-संग्राम हुआ, उसमें यह कसक निकली, और डच-सेनापति जनरल क्रोञ्जे को जब लार्ड राबर्टसन ने हराया, तो उन्होंने महारानी विक्टोरिया को तार दिया—"मजूबा का बदला ले लिया।"*परिणाम-स्वरूप 'ट्रान्सवाल' और 'आरेञ्ज-फ्री-स्टेट' की रचना हुई।

---

*इस दूसरे बोअर-संग्राम में गान्धीजी और उनके भारतीय साथियों ने अङ्गरेज़-घायलों की बड़ी सेवा की; चालीस-चालीस मील चलकर घायलों को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हीं वलन्दा अथवा डच लोगों को दक्षिण अफ्रीका में 'बोअर' कहते हैं। बोअर-लोग बड़े बहादुर, लड़ाके, और स्वतन्त्रता-प्रिय होते हैं। इनकी स्त्रियाँ भी बड़ी बहादुर और सादगी-पसन्द होती हैं। अपनी स्वतन्त्रता इन स्त्रियों को इतनी प्यारी होती है, कि विजयी, क्रूर लार्ड किचनर के समस्त अत्याचार इन्होंने सिर झुकाकर सह लिये। लॉर्ड किचनर ने भी इन्हें झुकाने में अपनी सभी क्रूरता खर्च कर दी। बेचारी स्त्रियों को अलग-अलग कोठरियों में बन्द कर दिया गया, खाने-पीने की सख़्त तकलीफ़ दी गई, गर्मी के मौसम में भीतर कोठरियों में बन्द रक्खा गया, और अनेक बदमाश, कामान्ध गोरों ने शराब के नशे में मदान्ध होकर इन असहाय स्त्रियों पर बलात्कार तक किया !!

परन्तु सब-कुछ होते हुए भी ये बहादुर औरतें दृढ़ रहीं, और अन्त में खुद बादशाह एडवर्ड ने लॉर्ड किचनर को लिखा—"मैं यह सहन नहीं कर सकता।

लाये, कष्ट सहा, जान पर खेले, और उसके बदले में कृतघ्न गोरों ने 'काले क़ानून' की रचना की, जिसे लेकर-ही सत्याग्रह-संग्राम आरम्भ हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर बोअर-लोगों को झुकाने का यही उपाय हमारे पास हो, तो इसकी अपेक्षा मैं हर प्रकार की सुलह को पसन्द करूंगा। आप शीघ्र लड़ाई ख़त्म कर दीजिये।"

अन्त में, सुलह हुई, और दक्षिण-अफ्रीका की चारों रियासतें एक तन्त्र के आधीन हुईं; और सच कहें तो—दक्षिण-अफ्रीका को पूर्ण स्वतन्त्रता मिली। अगर्चे, दक्षिण-अफ्रीका बृटिश राज्य कहलाता है, और उसका झण्डा यूनियन-जैक है, परन्तु वह वास्तव में पूर्ण रूप से स्वतन्त्र है, और दक्षिण-अफ्रीका के कार्य-कर्त्ताओं की अनुमति-बिना बृटिश-राज्य एक पैसा भी नहीं ले जासकता। बोअर-लोग वहाँ प्रजासत्तात्मक राज्य (Republic Government) इसलिये खड़ी करना नहीं चाहते, कि दक्षिण-अफ्रीका के कुछ भागों में गोरों का बाहुल्य है, और इस प्रकार करने से घरू-लड़ाई का सूत्रपात अनिवार्य होगा।

नेटाल में जब अङ्गरेज आकर बसे, तो उन्होंने देखा—यहाँ गन्ना, चाय और काफ़ी की पैदायश बहुत होसकती है, और अगर बड़े पैमाने पर इन चीज़ों की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेती की जाय, तो इसके लिए सैकड़ों-हज़ारों मज़दूरों की ज़रूरत है। थोड़े-से अङ्गरेज़ भला क्या-क्या करेंगे? अतः उन्होंने ग़रीब हब्शियों को इसके लिये डराना, धमकाना, और बहकाना-फुसलाना आरम्भ किया। पर चूंकि अब गुलामी-प्रथा का अन्त होगया था, इसलिये गोरे-लोग उन पर अपने स्वभाव-सिद्ध अत्याचार को चरम-सीमा-तक न पहुंचा सके। हब्शी-लोग बड़े आलसी और मौजी होते हैं।-वे साल में तीन-चार महीने साधारण परिश्रम करके भी अपना ख़र्च अच्छी तरह चला लेते हैं, अतएव तमाम साल गोरों के क्रूर पञ्जे के नीचे कोल्हू के बैल की तरह पिलने को वे तैयार न हुए।

पर बिना मज़दूर-मिले गोरों की महत्वाकांक्षाओं पर पाला पड़ा जा रहा था!—अतएव उन्होंने भारत-सरकार से लिखा-पढ़ी शुरू की, और अभागे, ग़रीब, भारतीयों को अपनी दासता की बेड़ियों में बाँधने का अनुरोध किया!—और अफ़सोस!—भारत की गोरी सरकार ने अपने लाड़ले भाइयों का अनुरोध स्वीकार भी कर लिया!-फलतः सन् १८५० में भारतीय मज़दूरों का पहला जहाज़ अफ्रीका आया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर्चे, इस समय गुलामी-प्रथा का अन्त होगया था, परन्तु स्वेच्छाचारी गोरों की प्रकृति में अन्तर न आया था, और न उनके दिलों से, कालों को गुलाम बनाने का लोभ-ही दूर हुआ था। सर विलियम विल्सन हराटर, वहाँ के एक बहुत-बड़े नागरिक, ने नेटाल के मज़दूरों की स्थिति को 'नीम गुलामी' स्वीकार किया था। ये बेचारे ग़रीव अनपढ़ मज़दूर नेटाल के भारतीय दलालों के चकमे में आकर, कृत्रिम और झूठे सब्ज़-बाग़ दिखाये जाकर, नेटाल चले आये। यहाँ पर इन बेचारों की ऐसी दुर्दशा हुई, और इनका जीवन ऐसे सङ्कट से गुज़रा, कि ये लोग शीघ्र-ही अपनी रीति-नीति, धर्म-कर्म, सब-कुछ भूल गये, और यहाँ-तक नौबत पहुँच गई, कि एक वेश्या और गृहस्थ-स्त्री में कुछ भी भेद न रहा !!

जब गिरिमिटिया-लोगों * के नेटाल जाने की खबर मारीशस पहुँची, तो वहाँ के मज़दूरों से सम्बन्ध रखने-वाले अनेक भारतीय व्यापारियों की

---

* जो मज़दूर नेटाल जाते हैं, वे एग्रीमेण्ट में आये हुए या गिरिमटिया कहलाते हैं। मारीशस टापू नेटाल और भारत के बीच में पड़ता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लार भी टपकी। मारीशस में हज़ारों भारतीय-व्यापारी और मज़दूर रहते हैं। उनमें से एक व्यापारी स्वर्गीय श्री अबूबकर आमद ने नेटाल में एक दूकान खोलने का निश्चय किया।

इस समय नेटाल के अंग्रेज़ों ने यह कल्पना भी न की थी, कि भारतीय क्या-क्या कर सकते हैं। वे इस समय गिरिमिटिया-मज़दूरों की मदद से चाय, काफ़ी, गन्ने की खेती कर, खूब नफ़ा कमा रहे थे, और इस नफ़े से उन्होंने दक्षिण-अफ्रीका में बड़ी-बड़ी विशाल अट्टालिकाओं का निर्माण कराया। ऐसे समय में चतुर व्यापारी सेठ अबूबकर ने अपना व्यापार वहाँ फैलाया। इधर भारत में उनकी जन्म-भूमि पोरबन्दर और आस-पास के इलाक़े में यह ख़बर पहुँची—कि सेठजी आजकल नेटाल में खूब मुनाफ़ा कमा रहे हैं। जल्द-ही दूसरे लोग—मेमन, बोहरा, और गुजरात-काठियावाड़ के हिन्दू-मेहता—भी पहुँच गये।

अब नेटाल में दो तरह के भारतीय होगये। (१) गिरिमिटिया-मज़दूर, (२) स्वतन्त्र व्यापारी-वर्ग। इधर गिरिमिटिया-लोगों के बाल-बच्चे हुए। अगर्चे कानूनन् उनके बाल-बच्चे मज़दूरी के लिये बँधे हुए न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे, तो भी उन पर क़ानून की कुछ कठोर धारायें लगा दी गई थीं। गिरिमिटिया पाँच साल मज़दूरी करने के बाद स्वतन्त्र होजाते थे। इनमें से कुछ स्वदेश लौट आते थे, और बहुतेरे वहीं बस जाते थे। जो वहीं बस जाते थे, वे 'फ्री इण्डियन' कहलाते थे;—हिन्दी में 'मुक्त भारतीय' कह सकते हैं। परन्तु इनमें और स्वतन्त्र भारतीयों (व्यापारी-वर्ग) के अधिकारों में भेद था। जैसे, एक गाँव से दूसरे गाँव जाने के लिये इन मुक्त भारतीयों को लाइसेन्स लेना पड़ता था, विवाह करती-दफ़ा भी उन्हें दफ़्तर में उसे दर्ज कराना पड़ता था, आदि-आदि। इसके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार की कठोरता उन पर की जाती थी।

जब भारतीयों ने अपना व्यापार नेटालमें फैलाया, तो नेटाल-स्थित मुक्त-भारतीय तो उनके ग्राहक बने-ही, साथ ही गोरों से डरने-वाले भोले-भाले हब्शी भी उनके ग्राहक बन गये। और इस तरह हब्शी-ग्राहकों से भारतीय-व्यापारियों ने खूब लाभ उठाया।

इसके बाद, जब भारतीय व्यापारियों ने सुना—कि ट्रान्सवाल और फ्री-स्टेट में बोअर-लोगों के बीच भी उनका व्यापार उन्नत होसकता है, तो उन्होंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस तरफ़ रुख़ किया, और वहाँ भी दुकानें खोलीं। बोअर-लोग अंग्रेजों की अपेक्षा अधिक सीधे-सादे, आडम्बर-शून्य होते हैं, और अंग्रेजों की तरह भारतीयों से घृणा या उपेक्षा भी प्रकट नहीं करते हैं, अतः ट्रान्सवाल और फ्री-स्टेट में भारतीय व्यापारियों को खूब बोअर-ग्राहक मिलने लगे।

अब केप-कालोनी बाक़ी रह गया। वहाँ भी कितने-ही भारतीय जा पहुँचे, और व्यापार-द्वारा धन कमाने लगे। इस प्रकार, क्रमशः चारों राज्यों में भारतीय फैल गये। इस समय स्वतन्त्र व्यापारियों की संख्या पचास हज़ार और मुक्त भारतीयों की एक लाख थी।

जब भारतीय-व्यापारी इस तरह चारों तरफ़ फैल गये, और मुक्त भारतीयों ने भी साग-सब्ज़ी-इत्यादि की खेती का, गोरों की प्रतिस्पर्द्धा आरम्भ कर दी, तो अंग्रेजों के कान खड़े हुए। मुक्त-भारतीयों की बढ़ती हुई संख्या, और फल-स्वरूप भारतीय व्यापारियों की उन्नति और अपने व्यापार की अवनति देखकर उन्होंने धारा-सभा में एक बिल पेश करवाया—जिसके अनुसार किसी भी स्वतन्त्र भारतीय को धारा-सभा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में (केवल भारतीय होने के कार पूर्ण थीं, इसलिये अधिकार न रहता। भारतीयों ने इसके ा, वह शुरू से और गाँधी जी के प्रयत्न से एक-ही र फ़! इसलिये भारतीयों के दस्तख़तों की दरख्वास्त प की, और गोरों सम्बन्ध में धारा-सभा के सदस्यों के कान तो अवश्य खड़े परन्तु कानून पास होगया। कानून स्वीकृत होने पर दस हज़ार स्वतन्त्र भारतीयों के दस्तख़तों की एक दरख़्वास्त चारों रियासतों के तत्कालीन प्रधान सचिव लार्ड रिपन के पास पहुंची। इस दरख़्वास्त से प्रभावित होकर उन्होंने उस विल को नामञ्जूर करते हुए कहा—कि "बृटिश सल्तनत कानून में रंग-भेद को स्थान नहीं दे सकती।"

गोरे व्यापारी तब भी न माने, और फल-स्वरूप दूसरी प्रकार के दो क़ानून धारा-सभा में पेश किये गये। एक का आशय था—कि बिना राज्य-अधिकारी से लाइसैन्स लिये कोई आदमी किसी क़िस्म का व्यापार न शुरू कर सके। इस पर भी खूब आन्दोलन हुआ, विरोध हुआ, पर क़ानून पास हो-ही गया। अब, गोरों को तो लाइसेन्स फ़ौरन् मिल जाता था, बेचारे भारतीयों को तरह-तरह के कष्ट उठाने

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति स्मृति संग्रह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता था; परेशानी होती थी। उस तरफ़ रुख़ ... भी भय था—कि अगर तैंतीस ... का रुख़ दक्षिण-अफ्रीका की तरफ आडम्बर-शून्य ... चालीस हज़ार गोरे तो चींटी ... से उनके पैरों-तले रौंदे जायँगे। अतएव ... भय की निवृत्ति के लिये दूसरा क़ानून पेश किया गया। उसका आशय यह था—कि भविष्य में वही भारतीय नेटाल में प्रवेश कर सकता है, जो योरोप की किसी भी भाषा का अच्छा जानकार हो। बस, इससे तैंतीस करोड़ भारतीयों के उबल पड़ने का भय जाता रहा।

ग़रीब, मुक्त-भारतीयों के लिये गोरों ने क्या षड्-यन्त्र सोचा, वह भी सुनिये। एक पक्ष ने कहा—कि प्रत्येक भारतीय गिरमिट की मियाद ख़त्म होने पर भारत लौट जायँ, दूसरा पक्ष कहता था, कि गिर-मिट की मियाद ख़त्म होने पर या तो फिर अपने को गिरमिट में बाँध लें, अन्यथा उनसे बहुत-भारी और असह्य मनुष्य-कर लिया जाय।—गोरों ने ऐसा कोलाहल मचाया, कि नेटाल की सरकार को एक कमीशन की नियुक्ति करनी पड़ी। असल में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों पक्षों की माँगें-ही अन्याय-पूर्ण थीं, इसलिये कमीशन को जो-कुछ प्रमाण मिला, वह शुरू से आख़िर-तक दोनों पक्षों के ख़िलाफ़! इसलिये उस वक़्त जीती मक्खी न निगली जा सकी, और गोरों की हिमायतिन—नेटाल की सरकार-ने इस सम्बन्ध में भारत सरकार से पत्र-व्यवहार शुरू किया। पर भारत-सरकार अपने लाड़ले भाइयों के इस घोर अनुचित आग्रह को मानने का कोई बहाना न ढूँढ़ सकी।

अब इस, तथा ऐसे-ही अनेक कारणों को लेकर नेटाल में उत्तर-दायित्व-पूर्ण शासन-व्यवस्था की स्थापना के लिये आन्दोलन शुरू हुआ, और उसे यह सत्ता सन् १८६३-१८६४ में प्राप्त होगई। अब नेटाल की सरकार में अपने पैरों पर आप खड़े होने की शक्ति आगई, और इस नवीन सरकार-द्वारा उस सम्बन्ध में बात-चीत करने के लिये दूत भेजे गये। उनकी इच्छा थी—कि प्रत्येक भारतीय की कमर पर ३७५) रु० वार्षिक कर का अन्याय-पूर्ण बोझ लादा जाय। मतलब इसका यह था—कि कोई भी मुक्त भारतीय—इतना भारी कर न दे सकने के परिणाम-स्वरूप— नेटाल में न रहने पावे। भारत के तत्कालीन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायसराय ने इस कर को २५ पौंड से घटाकर ३ पौंड कर दिया। यह कर न-सिर्फ मज़दूर को, बल्कि उसकी स्त्री और वयस्क बालकों को भी देना पड़ता था। इस तरह प्रत्येक मुक्त-भारतीय को लगभग १२ पौंड कर प्रति-वर्ष देना पड़ता था। अब यह कर कितना दुःखदायी मालूम पड़ता था—यह तो केवल भुक्त-भोगी ही जान सकते हैं। भारतीयों ने इसका खूब विरोध किया, बृटिश सरकार और भारत-सरकार को अर्जियाँ भेजी गईं, पर स्वेच्छाचारी सरकार का आसन न हिला! न हिला!!

नेटाल के अतिरिक्त—केप-कालोनी को छोड़कर—दक्षिण-अफ्रीका के अन्य राज्यों में भी निर्दोष भारतीयों को वक्र-दृष्टि से देखा जारहा था। ज़रा इनकी कहानी भी सुन लीजिये—

ट्रान्सवाल में भारतीय १८८१ ई० में पहले-पहल आये। एक के बाद एक अनेक व्यापारियों ने वहाँ अपना व्यापार फैलाया। ईर्ष्यालु गोरों को यह सहन कहाँ? अतः भारतीयों के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ हुआ, धारा-सभाओं में भारतीयों को निकाल देने की दरख्वास्तें जाने लगीं। इन अनुचित दरख्वस्तों में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

भारतीयों पर कुत्सित-से-कुत्सित लाञ्छन लगाये गये। जैसे—"ये लोग यह भी नहीं जानते, कि मानवी सभ्यता क्या चीज़ है। व्यभिचार-जनित रोगों से उनके शरीर सड़ रहे हैं, औरतों को वे अपना शिकार समझकर उनपर भयानक अत्याचार करते हैं।" फलतः धारा-सभा में भारतीय-विरोधक एक बिल पेश हुआ। भारतीय, प्रजासत्तात्मक ट्रान्सवाल के प्रेसीडेण्ट क्रूगर के पहुँचे, तो उस मूढ़, अहंकारी ने उन्हें अपने घर में भी न घुसने दिया, और बाहर-ही खड़े होकर कहा—"आप इस्माइल की औलाद हैं, और ईसा की औलाद की गुलामी करना-ही आपके भाग्य में है। इसलिये जो-कुछ थोड़े-बहुत अधिकार हम आपको दें, आपको उनके लिये-ही हमारा कृतज्ञ होना चाहिये।" यह थी दम्भ और अहम्मन्यता की पराकाष्ठा !!

बस, १८८३ ई० में एक घोर अनुचित, कठोर, दुष्टता-पूर्ण क़ानून पास कर दिया गया। आशय वही—"२५ पौंड कर प्रत्येक भारतीय से लिया जाय, और ट्रान्सवाल में उसे एक इञ्च ज़मीन भी न दी जाय।" परन्तु बड़ी सरकार (बृटिश सरकार) ने इस कानून का विरोध किया। जिसके फल-स्वरूप मामला पंचों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हाथ में आया। पंचों ने फैसला किया, कि २५ पौंड की जगह ३ पौंड कर लिया जाय, और ट्रान्सवाल की सरकार जहाँ बतावे, वहाँ-ही जगह मिल सके।

बस, अब भारतीयों की दुर्गति का ठिकाना न रहा। उन्हें शहरों से निकालकर बसने के लिये, गंदी से-गंदी ज़मीन दी गई। भारत के भङ्गी-टोलों में जैसी गन्दगी और दरिद्रता दिखाई देती है, इन मुहल्लों में भी वैसी-ही दिखाई देती थी। साथ-ही इस संशोधित विधान के अनुसार, भारतीय, व्यापार भी ऐसी-ही गन्दी बस्तियों में कर सकते थे; शहर से तो उन्हें मानों दूध की मक्खी की तरह निकाल-फेंका गया !! बोअर-युद्ध के आरम्भ-तक भारतीयों की यही दुःखद परिस्थिति रही।

फ्री-स्टेट के गोरों ने तो कमाल-ही कर दिया! भारतीयों की दस-पन्द्रह दुकानें भी वहाँ न होपाईं थीं, कि वावैला शुरू हुआ, और धारा-सभा ने एक-ही कानून में मैदान साफ़ कर दिया! इस नृशंसता-पूर्ण क़ानून के अनुसार भारतीय वहाँ न किसान बन-कर रह सकता था, न व्यापारी; वोट देने का अधिकार तो दूर की बात है!—हाँ, इतना अनुनय दिखाया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया, कि विशेष राजकीय अनुमति पाकर भारतीय, मज़दूर अथवा होटलों के नीच वेटर-इत्यादि बनकर रह सकते थे !! इस तरह यहाँ भी भारतीयों पर दोनों हाथ कुल्हाड़ा चला।

केप-कालोनी में भारतीयों का विरोध कुछ कम था। पाठशालाओं में हिन्दुस्तानी बच्चे दाखिल नहीं किये जा सकते थे, हिन्दुस्तानी मुसाफ़िर होटलों में मुश्किल-से जगह पाते थे—इत्यादि। परन्तु व्यापार अथवा ज़मीन के सम्बन्ध में भारतीयों पर कोई प्रतिरोध न था। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि—केप-कालोनी में मलायी-लोग अधिक संख्या में रहते थे। ये मलायी डच हैं, और इस्लाम-धर्म के पैरोकार हैं। अतएव, हिन्दुस्तानियों का—विशेषतः मुसल्मानों का—सम्बन्ध इनसे फ़ौरन् होगया, और अनेक हिन्दुस्तानी-मुसल्मानों ने तो मलायी-स्त्रियों से विवाह भी कर डाला। अब जो क़ानून हिन्दुस्तानियों के ख़िलाफ़ होता—वह मलायियों के भी खिलाफ़ पड़ता !—और यह सम्भव कैसे था !—क्योंकि मलायी-लोग तो एक प्रकार से डच-ही ठहरे। इस प्रकार केप-कालोनी में रंग-द्वेष कम रहा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा कारण यह भी—कि केप-कालोनी दक्षिण-अफ्रीका का सब से पुराना राज्य और शिक्षा-स्थल है, इसलिये वहाँ सज्जन और उदार गोरों का सर्वथा अभाव न था। परन्तु यह कैसे सम्भव था, कि पड़ौसियों की हवा केप-कालोनी में न पहुँचती ? अतः भारतीयों के प्रवेश और उनके व्यापार को रोकने के लिये लाइसेन्स-आदि देने के क़ानून गढ़े गये—मतलब यह कि १८६६-तक दक्षिण-अफ्रीका का दर्वाज़ा भारतीयों के लिये क़रीब-क़रीब बन्द होगया !!

जब समस्त दक्षिण-अफ्रीका से भारतीयों को इस प्रकार दुरदुराया जा रहा था, प्रत्येक प्रतिष्ठित भारतीय-तक 'कुली' के नाम से पुकारा जाने लगा, और सड़कों पर चलते हुए भारतीय भी गोरों-द्वारा तिरस्कृत किये जाने लगे, तो सन् १८६३ ई० में, वहाँ पर सर्वस्व-त्यागी, महा-पुरुष गाँधीजी का—एक साधारण बैरिष्टर के रूप में—अवतरण हुआ। संयोग-वश, दादा अबदुल्ला नाम के, पोरबन्दर के सेठ के मुक़दमे में मदद देने को उन्हें दक्षिण-अफ्रीका जाना पड़ा। नेटाल पहुँचने पर गाँधीजी ने जैसा भयानक कष्ट पाया, और गोरों ने पद-पद पर उन्हें जैसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमानित किया—उससे उनके हृदय पर सहसा बड़ा भयानक धक्का लगा !—गाँधीजी को रेल के पहले, दूसरे-दर्जे में न बैठने दिया गया, रेल में से उनका सामान निकालकर फेंक दिया गया, और कई जगह नर-पशु गोरों ने उन महापुरुष को खूब पीटा भी !—और इस तरह गाँधी जी ने भारतीयों की परिस्थिति का अच्छी तरह अनुमान और अध्ययन कर लिया।—और सच पूछिये—तो सत्याग्रह का अंकुर भी यहीं से फूटा !!

सन् १८९४ ई० में गान्धीजी का वह काम समाप्त होगया, जिसके सम्बन्ध में वे दक्षिण-अफ्रीका गये थे, और उन्होंने लौटने की तैयारी की विदाई की सभा में किसी ने उनके हाथ में एक अखबार लाकर रक्खा। उसमें सहसा उन्होंने पढ़ा, कि धारा-सभा में किसी ऐसे क़ानून पर विचार हो रहा है, जिसके-द्वारा भारतीयों के तमाम अधिकार छीन लिये जाते। गाँधीजी ने सभा के लोगों को उस क़ानून का रहस्य समझाया, और उसका विरोध करने की सलाह दी। इस तरह वह विदाई की सभा एक परामर्श-सभा बन गई। गाँधीजी से अनुरोध किया गया गया—कि वे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ दिन वहाँ ठहरकर आन्दोलन चलाने में सहायता दें। गाँधीजी वहाँ ठहरे और जैसा पहले कहा जा चुका है, उनके अध्यवसाय से ४०० दस्तख़तों की पहली दर्ख़्वास्त नेटाल की धारा-सभा में और १०,००० दस्तख़तों की दर्ख़्वास्त लार्ड रिपन के पास भेजी गई।

फिर गाँधीजी भारत लौटने को तैयार हुए—तो वहाँ के उत्साही भारतीयों ने फिर उनसे कुछ दिन ठहरने का आग्रह किया, और कहा—कि अगर आप कुछ दिन और ठहर जायँ, तो हमारे कुछ और कष्ट भी दूर होसकते हैं। गाँधीजी का तो जन्म ही सेवा के लिये हुआ था, वे फिर ठहर गये, और 'नेटाल-इण्डियन-काँग्रेस' के नाम से भारतीयों की एक राष्ट्रीय संस्था स्थापित हुई। सन् १८९६ ई० में गाँधीजी कुछ दिन के लिये भारत लौटे। यहाँ आकर आप प्रसिद्ध पत्र-सम्पादकों, लोकमान्य और गोखले-जैसे नेताओं और अन्य गण्य-मान्य पुरुषों से मिले। आपके अध्यवसाय से स्थान-स्थान पर सभायें हुईं, लेक्चर हुए, और दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की समस्या खुले ढङ्ग से भारत-निवासियों के सम्मुख रक्खी गई। पत्रों में टिप्पणियाँ हुईं, लोगों में जोश पैदा हुआ,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्व-साधारण को दक्षिण-भारतीयों के प्रति सहानुभूति और अनुराग पैदा हुआ।

इन सभाओं, और इस आन्दोलन की ख़बर नमक-मिर्च लगकर अफ्रीका और इङ्गलैण्ड में पहुँची। दक्षिण-अफ्रीकाके गोरोंने जब सुना—गाँधी ने उनके विरुद्ध ज़हर उगला है, उन्हें बदनाम किया है, तो उनकी उच्छृ-ङ्खलता एकबारगी उछल-कर ऊपर आगई, और वे लोग गाँधी जी को अपना बड़ा-भारी दुश्मन समझने लगे।

इसी समय नेटाल से एक तार गाँधीजी को मिला, जिसमें उन्हें फ़ौरन् चले आने के लिये लिखा था। लगन-वाले गाँधीजी क्षण-भर की देर किये-विना चलने को तैयार होगये, और स-परिवार दक्षिण-अफ्रीका को चले। उनके साथ-ही, और एक दूसरे स्टीमर में कोई ८०० भारतीय और थे—जो अपने-अपने काम से जा रहे थे; गाँधीजी से उनका कोई सम्पर्क नहीं था। इन दोनों जहाज़ों का नाम 'कोर्लैण्ड' और 'नादिरी' था।

बस, यहाँ हमारी प्रस्तावता ख़त्म होती है। आगे, गाँधीजी कैसे अफ्रीका पहुँचे, और किस तरह युद्ध चला, और किस तरह विजय पाई, यही हमारी पुस्तक का विषय है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला खण्ड

(१)

एक दिन, तीसरे-पहर, एक मुसलमान-व्यापारी डर्बन की एक सुनसान सड़क पर चला जारहा है। व्यापारी का नाम अब्दुल्ला है, और भारत से आये हुए आठ सौ मुसाफ़िरों के स्वागतार्थ डर्बन के बन्दरगाह की तरफ़ उसका रुख है। जिन दो जहाज़ों में भारतीय सवार थे, नेटाल के गोरों के आग्रह से नेटाल-सरकार ने २-३ दिन से उन्हें खाड़ी में रोक रक्खा था। बड़ी कठिनता से आज उतरने की आज्ञा मिली है।

अचानक किसी तरफ़ से आवाज़ आई—"ओ, कुली!—ओ, कुली-मर्चेण्ट!"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीयों पर कुत्सित-से-कुत्सित लाञ्छन लगाये गये। जैसे—"ये लोग यह भी नहीं जानते, कि मानवी सभ्यता क्या चीज़ है। व्यभिचार-जनित रोगों से उनके शरीर सड़ रहे हैं, औरतों को वे अपना शिकार समझकर उनपर भयानक अत्याचार करते हैं।" फलतः धारा-सभा में भारतीय-विरोधक एक बिल पेश हुआ। भारतीय, प्रजासत्तात्मक ट्रान्सवाल के प्रेसीडेण्ट क्रूगर के पहुँचे, तो उस मूढ़, अहंकारी ने उन्हें अपने घर में भी न घुसने दिया, और बाहर-ही खड़े होकर कहा—"आप इस्माइल की औलाद हैं, और ईसा की औलाद की गुलामी करना-ही आपके भाग्य में है। इसलिये जो-कुछ थोड़े-बहुत अधिकार हम आपको दें, आपको उनके लिये-ही हमारा कृतज्ञ होना चाहिये।" यह थी दम्भ और अहम्मन्यता की पराकाष्ठा!!

बस, १८८३ ई० में एक घोर अनुचित, कठोर, दुष्टता-पूर्ण क़ानून पास कर दिया गया। आशय वही—"२५ पौंड कर प्रत्येक भारतीय से लिया जाय, और ट्रान्सवाल में उसे एक इञ्च ज़मीन भी न दी जाय।" परन्तु बड़ी सरकार (बृटिश सरकार) ने इस कानून का विरोध किया। जिसके फल-स्वरूप मामला पंचों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हाथ में आया। पंचों ने फैसला किया, कि २५ पौंड की जगह ३ पौंड कर लिया जाय, और ट्रान्सवाल की सरकार जहाँ बतावे, वहाँ-ही जगह मिल सके।

बस, अब भारतीयों की दुर्गति का ठिकाना न रहा। उन्हें शहरों से निकालकर बसने के लिये, गंदी से-गंदी ज़मीन दी गई। भारत के भङ्गी-टोलों में जैसी गन्दगी और दरिद्रता दिखाई देती है, इन मुहल्लों में भी वैसी-ही दिखाई देती थी। साथ-ही इस संशोधित विधान के अनुसार, भारतीय, व्यापार भी ऐसी-ही गन्दी बस्तियों में कर सकते थे; शहर से तो उन्हें मानों दूध की मक्खी की तरह निकाल-फेंका गया !! बोअर-युद्ध के आरम्भ-तक भारतीयों की यही दुःखद परिस्थिति रही।

फ्री-स्टेट के गोरों ने तो कमाल-ही कर दिया! भारतीयों की दस-पन्द्रह दुकानें भी वहाँ न होपाई थीं, कि वावैला शुरू हुआ, और धारा-सभा ने एक-ही कानून में मैदान साफ़ कर दिया! इस नृशंसता-पूर्ण क़ानून के अनुसार भारतीय वहाँ न किसान बन-कर रह सकता था, न व्यापारी; वोट देने का अधिकार तो दूर की बात है!—हाँ, इतना अनुनय दिखाया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया, कि विशेष राजकीय अनुमति पाकर भारतीय, मज़दूर अथवा होटलों के नीच वेटर-इत्यादि बनकर रह सकते थे!! इस तरह यहाँ भी भारतीयों पर दोनों हाथ कुल्हाड़ा चला।

केप-कालोनी में भारतीयों का विरोध कुछ कम था। पाठशालाओं में हिन्दुस्तानी बच्चे दाख़िल नहीं किये जा सकते थे, हिन्दुस्तानी मुसाफ़िर होटलों में मुश्किल-से जगह पाते थे—इत्यादि। परन्तु व्यापार अथवा ज़मीन के सम्बन्ध में भारतीयों पर कोई प्रतिरोध न था। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि—केप-कालोनी में मलायी-लोग अधिक संख्या में रहते थे। ये मलायी डच हैं, और इस्लाम-धर्म के पैरोकार हैं। अतएव, हिन्दुस्तानियों का—विशेषतः मुसलमानों का—सम्बन्ध इनसे फ़ौरन् होगया, और अनेक हिन्दुस्तानी-मुसलमानों ने तो मलायी-स्त्रियों से विवाह भी कर डाला। अब जो क़ानून हिन्दुस्तानियों के ख़िलाफ़ होता—वह मलायियों के भी ख़िलाफ़ पड़ता!—और यह सम्भव कैसे था!—क्योंकि मलायी-लोग तो एक प्रकार से डच-ही ठहरे। इस प्रकार केप-कालोनी में रंग-द्वेष कम रहा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा कारण यह भी—कि केप-कालोनी दक्षिण-अफ्रीका का सब से पुराना राज्य और शिक्षा-स्थल है, इसलिये वहाँ सज्जन और उदार गोरों का सर्वथा अभाव न था। परन्तु यह कैसे सम्भव था, कि पड़ौसियों की हवा केप-कालोनी में न पहुँचती? अतः भारतीयों के प्रवेश और उनके व्यापार को रोकने के लिये लाइसेन्स-आदि देने के क़ानून गढ़े गये—मतलब यह कि १८६६-तक दक्षिण-अफ्रीका का दर्वाज़ा भारतीयों के लिये क़रीब-क़रीब बन्द होगया !!

जब समस्त दक्षिण-अफ्रीका से भारतीयों को इस प्रकार दुरदुराया जा रहा था, प्रत्येक प्रतिष्ठित भारतीय-तक 'कुली' के नाम से पुकारा जाने लगा, और सड़कों पर चलते हुए भारतीय भी गोरों-द्वारा तिरस्कृत किये जाने लगे, तो सन् १८६३ ई० में, वहाँ पर सर्वस्व-त्यागी, महा-पुरुष गाँधीजी का—एक साधारण बैरिष्टर के रूप में—अवतरण हुआ। संयोग-वश, दादा अबदुल्ला नाम के, पोरबन्दर के सेठ के मुक़दमे में मदद देने को उन्हें दक्षिण-अफ्रीका जाना पड़ा। नेटाल पहुँचने पर गाँधीजी ने जैसा भयानक कष्ट पाया, और गोरों ने पद-पद पर उन्हें जैसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमानित किया—उससे उनके हृदय पर सहसा बड़ा भयानक धक्का लगा!—गाँधीजी को रेल के पहले, दूसरे-दर्जे में न बैठने दिया गया, रेल में से उनका सामान निकालकर फेंक दिया गया, और कई जगह नर-पशु गोरों ने उन महापुरुष को खूब पीटा भी!—और इस तरह गाँधो जी ने भारतीयों की परिस्थिति का अच्छी तरह अनुमान और अध्ययन कर लिया।—और सच पूछिये—तो सत्याग्रह का अंकुर भी यहीं से फूटा!!

सन् १८९४ ई० में गान्धीजी का वह काम समाप्त होगया, जिसके सम्बन्ध में वे दक्षिण-अफ्रीका गये थे, और उन्होंने लौटने की तैयारी की विदाई की सभा में किसी ने उनके हाथ में एक अखबार लाकर रक्खा। उसमें सहसा उन्होंने पढ़ा, कि धारा-सभा में किसी ऐसे क़ानून पर विचार हो रहा है, जिसके-द्वारा भारतीयों के तमाम अधिकार छीन लिये जाते। गाँधीजी ने सभा के लोगों को उस क़ानून का रहस्य समझाया, और उसका विरोध करने की सलाह दी। इस तरह वह विदाई की सभा एक परामर्श-सभा बन गई। गाँधीजी से अनुरोध किया गया गया—कि वे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ दिन वहाँ ठहरकर आन्दोलन चलाने में सहायता दें। गाँधीजी वहाँ ठहरे और जैसा पहले कहा जा चुका है, उनके अध्यवसाय से ४०० दस्तख़तों की पहली दर्ख़्वास्त नेटाल की धारा-सभा में और १०,००० दस्तख़तों की दर्ख़्वास्त लार्ड रिपन के पास भेजी गई।

फिर गाँधीजी भारत लौटने को तैयार हुए—तो वहाँ के उत्साही भारतीयों ने फिर उनसे कुछ दिन ठहरने का आग्रह किया, और कहा—कि अगर आप कुछ दिन और ठहर जायँ, तो हमारे कुछ और कष्ट भी दूर होसकते हैं। गाँधीजी का तो जन्म ही सेवा के लिये हुआ था, वे फिर ठहर गये, और 'नेटाल-इण्डियन-काँग्रेस' के नाम से भारतीयों की एक राष्ट्रीय संस्था स्थापित हुई। सन् १८९६ ई० में गाँधीजी कुछ दिन के लिये भारत लौटे। यहाँ आकर आप प्रसिद्ध पत्र-सम्पादकों, लोकमान्य और गोखले-जैसे नेताओं और अन्य गण्य-मान्य पुरुषों से मिले। आपके अध्यवसाय से स्थान-स्थान पर सभायें हुईं, लेक्चर हुए, और दक्षिण-अफ्रीका के भारतीयों की समस्या खुले ढङ्ग से भारत-निवासियों के सम्मुख रक्खी गई। पत्रों में टिप्पणियाँ हुईं, लोगों में जोश पैदा हुआ,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्व-साधारण को दक्षिण-भारतीयों के प्रति सहानुभूति और अनुराग पैदा हुआ।

इन सभाओं, और इस आन्दोलन की खबर नमक-मिर्च लगकर अफ्रीका और इङ्गलैण्ड में पहुँची। दक्षिण-अफ्रीकाके गोरों ने जब सुना—गाँधी ने उनके विरुद्ध ज़हर उगला है, उन्हें बदनाम किया है, तो उनकी उच्छृ-ङ्खलता एकबारगी उछल-कर ऊपर आगई, और वे लोग गाँधी जी को अपना बड़ा-भारी दुश्मन समझने लगे।

इसी समय नेटाल से एक तार गाँधीजी को मिला, जिसमें उन्हें फ़ौरन् चले आने के लिये लिखा था। लगन-वाले गाँधीजी क्षण-भर की देर किये-बिना चलने को तैयार होगये, और स-परिवार दक्षिण-अफ्रीका को चले। उनके साथ-ही, और एक दूसरे स्टीमर में कोई ८०० भारतीय और थे—जो अपने-अपने काम से जा रहे थे; गाँधीजी से उनका कोई सम्पर्क नहीं था। इन दोनों जहाज़ों का नाम 'कोर्लैण्ड' और 'नादिरी' था।

बस, यहाँ हमारी प्रस्तावता खत्म होती है। आगे, गाँधीजी कैसे अफ्रीका पहुँचे, और किस तरह युद्ध चला, और किस तरह विजय पाई, यही हमारी पुस्तक का विषय है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला खण्ड

(१)

एक दिन, तीसरे-पहर, एक मुसलमान-व्यापारी डर्बन की एक सुनसान सड़क पर चला जारहा है। व्यापारी का नाम अब्दुल्ला है, और भारत से आये हुए आठ सौ मुसाफ़िरों के स्वागतार्थ डर्बन के बन्दर-गाह की तरफ़ उसका रुख़ है। जिन दो जहाज़ों में भारतीय सवार थे, नेटाल के गोरों के आग्रह से नेटाल-सरकार ने २-३ दिन से उन्हें खाड़ी में रोक रक्खा था। बड़ी कठिनता से आज उतरने की आज्ञा मिली है।

अचानक किसी तरफ़ से आवाज़ आई—"ओ, कुली !—ओ, कुली-मर्चेण्ट !"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टामसन ने होठ मरोड़कर तेज़ी से कहा—"कायर!—जा!!"

"ओह!—नहीं दोस्त, यह कहता हूँ—मि० लाटन की जान का भी खतरा हो सकता है; साथ होंगे न?"

"ओह। व्यर्थ की बहस करते हो—मि० लाटन को हम अलग हटा लेंगे।—अगर डरते हो तो, जाओ; अगर नहीं, तो गाड़ी को रवाना करदो, हमारे साथ आओ।"

—कहकर टामसन अपने साथियों-सहित आगे बढ़ा।

गाड़ी रवाना होगई, और हैट और ओवरकोट उतारकर हर्बर्ट इस गुट में शामिल होगया।

(३)

मि० लाटन दादा अब्दुल्ला के वकील हैं, और गाँधीजी के मित्र भी। जब-तक जहाज़ रुके खड़े रहे, इन्होंने यद्यपि अपनी मित्रता और सदाशयता का कोई परिचय नहीं दिया—परन्तु अब जाने कहाँ का प्रेम उमड़ पड़ा—कि वे जहाज़ पर गाँधीजी से मिलने आये।

आते-ही आपने कहा—"हल्लो, मि० गाँधी, बधाई!"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँधीजी ने उनको धन्यवाद दिया।

मि० लाटन ने कहा—"दो-तीन दिन से मैं बड़ा चिन्तित था। सोचता था—आप लोगों को न उतरने दिया गया, तो बड़ा अनुचित होगा। सचमुच आपको यहाँ उतरने का क़ानूनन् हक़ है!"

गाँधीजी ने मुस्कराकर कहा—"मैं सदा न्याय और औचित्य का पक्ष लेता हूँ। खुशी की बात है, आप भी मेरे हम-ख़याल हैं।"

"हरेक युक्ति-पूर्ण मनुष्य आपका हम-ख़याल होगा!"—मि० लाटन ने कहा—"मगर अब उतरिए न, देर क्या है?"

गाँधीजी ने मि० एस्कम्ब का एक पत्र पाया है। उसे पढ़कर वे विचार में पड़ गये हैं। उसमें उन्होंने अनुरोध किया है—कि वे शाम-तक जहाज़ से न उतरें। गोरे उनके ख़िलाफ़ भड़के हुए हैं। शाम को बन्दरगाह के सुपरिंटेण्डेण्ट आकर उन्हें ले जायँगे।

मि० लाटन के उत्तर में गाँधीजी ने यह पत्र उनकी हथेली पर रख दिया।

मि० लाटन एक नज़र से उस पत्र को पढ़ गये, और आख़िर-तक पहुँचकर, हँसकर बोल उठे—"अच्छा! मि० एस्कम्ब हैं!"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी हाँ," गाँधीजी ने कहा।

"तो क्या आप शाम से पहले उतरने का विचार नहीं रखते ?"

"यही सोच रहा हूँ।"

"छीः !—आप डरते है ?"

"न, डरता इतना नहीं हूँ," गाँधीजी गम्भीर होकर बोले—"मैं सोचता हूँ—मि० एस्कम्ब के स्नेह-पूर्ण आग्रह को मुझे मानना चाहिये, या नहीं। स्त्री-बच्चों को मैं पारसी रुस्तमजी के यहाँ भेज चुका हूँ।—अब मैं इसी विचार में पड़ा हूँ......"

"ओह !—आप बड़े भोले हैं!" मि० लाटन ने मुँह बनाकर कहा—"मि० एस्कम्ब की बात पर आप यक़ीन करते हैं?"—फिर अर्द्ध-सम्बोधित स्वर में बोले—"रात को आना!—अकेले आना!—और सब को उतर जाने दो!—वाह वा! मि० गाँधी, आप देखिये तो—इन तीन वाक्यों में से कैसा कुत्सित षड्-यन्त्र झाँक रहा है!"

गाँधीजी ने कहा—"सदुद्देश्य से भी लिखा जा सकता है!"

"हाँ, मानता हूँ; लिखा जा सकता है!" मि० लाटन ने अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी तीन बार बाईं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हथेली पर मारकर कहा—"मगर मि० एस्कम्ब !—राम! राम! उनका विश्वास आपने किस सुबूत पर किया ?—उन्होंने आप-के साथ कौन-सी भलाई की है ?—और आप यह तो जानते-ही हैं, कि जिस कमेटी के नोटिस आपको और अन्य जहाज़-वालों को मिले हैं, उसके अध्यक्ष मि० एस्कम्ब-ही हैं, और नेटाल के गोरों को उत्तेजित करने का श्रेय इन्हीं महा-पुरुष को है !!"

"सब जानता हूँ, मि० लाटन !" गाँधीजी ने गर्दन नीची कर, अपने स्वाभाविक मीठे, गम्भीर और नम्र स्वर में कहा—"मगर देखिये—आदमी के विचार सदा एक-से नहीं रहते।—"

"ख़ैर !" मि० लाटन ने कुछ उपेक्षा-पूर्ण स्वर में कहा—"मैं बहस में पड़ना नहीं चाहता। आपकी समझ में आवे, सो कीजिये। मगर मेरी राय में, रात को कदापि न उतरिये। मैं आपका मित्र हूँ। इसी हैसियत से, मैं आपको मि० एस्कम्ब की सलाह मानने की राय कभी न दूँगा। हाँ, अगर आप इस वक्त उतरते डरते हैं, तो यह उचित होगा, कि आप आज रात में न उतरकर कल सुबह उतरें।"

जहाज़ में बैठे-बैठे मुद्दत होगई थी, और मि० लाटन की बातें कुछ ऐसी आकर्षक, सहानुभूति-पूर्ण,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्ति-युक्त मालूम पड़ती थीं, कि भोले-भाले; सच्चे गाँधीजी को उनका विश्वास-करते अधिक देर न लगी। बोले—"ख़ैर, मैं मि० एस्कम्ब की नीयत में सन्देह न कर, सज्जनता का एहसान मानता हूँ, और आपकी बात पर भी विश्वास करता हूँ—"

"हाँ तो—" मि० लाटन ने जल्दी-से कहा—"अगर आप मुझपर विश्वास करते हैं, तो यह मेरा परम सौभाग्य है। गोरे सब तितर-वितर होगये हैं। अगर कुछ हुए भी—तो मैं वचन देता हूँ—कि मेरे रहते कोई आपका बाल-बाँका न कर सकेगा। कहिये, क्या विचार हैं?"

गाँधीजी ने भोले बच्चों की तरह उत्तर दिया—"तब तो मैं आपके साथ-ही चलना उचित समझूँगा।"

"धन्यवाद!"—मि० लाटन ने कहा—"और देखिये—इस वक़्त न उतरें, और चोरों की तरह रात-बिरात में जायँ, तो इससे आपकी-ही नहीं, समस्त भारतीयों की प्रतिष्ठा में कलंक लगता है। जब क़ानूनन् आपको उतरने का हक़ है, और गवर्नमेंट ने उसे मान लिया है—तो जान की भी पर्वाह न कर, आपको खुले-आम जाना चाहिये।—इसके लिये आप पर आपत्ति भी आवे, तो पर्वाह नहीं करनी चाहिये।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँधीजी ने जल्दी-से कहा—"न, न, वह बात नहीं; मैं सोच रहा था, अगर अभी उतर जाऊँ, और मि० एस्कम्ब की बात न मानूँ, तो उनके साथ अन्याय तो न होगा, या मैं अपनी आत्मा को धोखा तो न दूँगा।—अच्छा, मैं पगड़ी पहनकर अभी आया!—ठहरिये!"

(४)

मिस्टर लाटन के साथ गाँधीजी उतरने लगे, तो कप्तान ने आकर कहा—"महाशय, मि० एस्कम्ब का एक पत्र मुझे मिला है, जिसमें उन्होंने अनुरोध किया है—कि मैं आपसे शाम-तक न उतरने की प्रार्थना करूँ।"

"क्यों?"

"शहर के गोरे आपके विरुद्ध भड़के हुए हैं। शाम को बन्दरगाह के सुप्रिण्टेंडेण्ट मि० टैटम आयेंगे, और आपको अपने साथ लेजायेंगे।"

गाँधीजी ने भोले पन-से मि० लाटन की ओर संकेत करके कहा—"औरये जो हैं!"

कप्तान ने एकबार मि० लाटन की ओर देखा, और चुप रह गया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मि० लाटन ने कहा—"कप्तान, मि० एस्कम्ब ने जितना डर दिखाया है, हक़ीक़त में उतना है नहीं। गोरे सब तितर-बितर होगये हैं, इनको उतरने की आज्ञा क़ानूनन् मिल चुकी है। ऐसी स्थिति में तुम इन्हें रात में उतरने की सलाह क्यों देते हो?"

कप्तान ने कहा—"ख़ैर, मैं अपना कर्त्तव्य-पालन कर चुका।—अब आप जानें, ये जानें।"

दोनों आदमी बाहर आये। गाँधीजी बोले—"क्यों न एक गाड़ी लेलें?"

"ओह!—चलिये," मि० लाटन ने कहा—"है कितनी दूर?—अब पहुंचे।—और जहाज़ में बैठे-बैठे तो आप थक भी गये होंगे, चलिये, थोड़ी दूर पैदल-ही चलें!"

निष्कपट गाँधीजी को क्या उज़र?—"चलिये!"

गाँधीजी की पगड़ी नेटाल-भर में प्रख्यात है। बच्चा-बच्चा उनकी पगड़ी को पहचानता है। बन्दरगाह से पाँच-सौ कदम आगे बढ़े थे—कि एक अख़बार बेचने-वाला लड़का ज़ोर-से चिल्ला उठा—"अरे गाँधी! गाँधी!!"

—कुछ और आवारः लड़के वहाँ फिर रहे थे। अख़बार-वाले छोकरे की देखा-देखी वे भी सब-के-सब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिल्ला पड़े —"अरे, गाँधी ! गाँधी !!"

मि० लाटन ने धीरे से कहा—"यह तो गड़बड़ हुआ जाता है !"

गाँधीजी ने हँसकर कहा—"चलिये ! चलिये !!"

कुछ दूर आगे बढ़े। लड़कों का झुण्ड पीछे-पीछे "गाँधी ! गाँधी !!" चिल्लाता चला आता था। इतने में कुछ समुद्री कुली और निम्न श्रेणी के व्यक्ति आते दिखाई दिये। उन्होंने यह तमाशा देखा—तो खुद भी लड़कों के झुण्ड में मिलकर "गाँधी ! गाँधी !!—मारो ! मारो !!" चिल्लाने लगे।

मि० लाटन ने गाँधीजी के कान में कहा—"मामला बढ़ता जा रहा है, आइये इस तरफ़ से होलें।"

संकेत एक छोटी और सुनसान सड़क की तरफ़ था।

पीछे आने वाली भीड़ तो बेशक छुट गई, और गाँधीजी के मन की उद्विग्नता भी कुछ घट चली थी, कि सहसा……

पास की गली में से "गाँधी ! गाँधी !!—पकड़लो ! मारदो !! जाने न पावे !!!"—इत्यादि चिल्लाते हुए बहुत-से गोरों का झुण्ड निकल आया।

गाँधीजी ने चौंक-कर एक बार उधर देखा—और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तब उसी पहले जैसे निर्विकार भाव से चलते रहे।

अचानक उनकी दाँई कलाई पर कोई चीज़ लगी। देखा—छीः! छीः!! एक अण्डे का सड़ा हुआ चेप उनकी कलाई में लगा हुआ था!

इधर गाँधीजी रूमाल निकालकर चेप साफ़ करने लगे, उधर उन पीछा करने-वाले गोरों के झुण्ड में ज़ोर का एक ठहाका पड़ा!

मि० लाटन ने गाँधीजी के कान में कहा—"मि० गाँधी, भाग चलें, तो कैसा?"

"भाग चलें?" गाँधीजी ने सूखी हँसी हँसकर कहा—"क्यों भागें?—जान जाने से इतना डर?—ज़रूर कभी-न-कभी मेरे ये भूले हुए भाई अपनी ग़लती समझकर उस पर पश्चात्ताप करेंगे।"

मि० लाटन मर्माहत होगये। ओफ्! मनुष्य है कि देवता!! ग़ज़ब हुआ!! बुरा हुआ!!

उन्होंने क्षण-भर स्थिर नेत्रों से गाँधीजी के तेज-पूर्ण निर्विकार मुख की ओर देखा, और तब माथे पर हाथ मारकर बड़बड़ाये—"माँ मरियम!—मैंने क्या किया!!"

—और तब घबराकर उन्होंने गोरों की तरफ़ रुख किया, और दोनों हाथ उठाकर कहा—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाइयो !—"

गोरों ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया-"गाँधी को मार डालो ! गाँधी को मार डालो !!"

मि० टामसन ने फिर एक बार कोशिश की ।—मगर अब कौन सुनता है ?

तब उन्होंने इधर-उधर देखा । देखा—सामने से एक हब्शी खाली रिक्शा लिये चला आता है । हाथ के संकेत से उन्होंने उसे बुलाया ।

रिक्शा-वाला डरता-डरता बढ़ा । सहसा दो गोरे उछलकर उसके पास पहुँचे, और ज़ोर-से एक-एक तमाँचा उसके मुँह पर मारकर बोले—"जा, भागजा, सूअर !—वर्ना याद रख, अभी तेरी गाड़ी तोड़ डालेंगे !"

मि० लाटन ने कहा—"अरे, चल इधर; डर नहीं।"

परन्तु रिक्शावाला तमाँचा खाने से आगे कुछ सहना नहीं चाहता था, बेचारा गाल सहलाता हुआ चलता बना ।

मि० लाटन ने निरुपाय दृष्टि से एक बार गाँधीजी की ओर देखा, और एक बार फिर दोनों हाथ उठाकर गोरों को शान्त करने की कोशिश की । उन्होंने कहा—"भाइयो—!"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु इस 'भाइयो—!' के आगे उनके मुँह से कोई शब्द न निकल पाया था—कि दो बलिष्ठ गोरे उन्हें अ-चूक उठाकर न-जाने किधर ग़ायब होगये।

अब अकेले गाँधीजी निरुपाय, निस्सहाय,—उस परदेश में, निर्जन सड़क पर, अपनी जान के दुश्मन सैकड़ों दुर्दान्त गोरों के बीच में खड़े रह गये !!

चारों तरफ़ से ईंटों, पत्थरों और ढेलों की बौछार उन पर होने लगी। एक गोरे ने उछलकर उनकी पगड़ी फेंक दी, और सारे गोरे खिलखिलाकर हँस पड़े।

गाँधीजी के हाथ-पैर पत्थर की चोट खा-खाकर लोहू-लुहान होगये, चेहरा क्षत-विक्षत होगया, कपड़े फट गये, और शरीर शिथिल होने लगा।

इतने में शैतान टामसन का लम्बा-चौड़ा शरीर गाँधीजी के बिल्कुल समीप प्रकट हुआ। उसने गाँधीजी के सिर के बाल कसकर पकड़े, और नल की टोंटी की तरह उनका मुँह अपनी तरफ़ घुमाकर कहा—"क्यों बे गाँधी-कुत्ते !—हमसे लड़ेगा ?—"

कहते-कहते उसने दांत पीसकर जोर-से एक तमाँचा उनके मुँह पर जड़ दिया, और फिर पूरी ताक़त से एक लात उनकी कमर में जमाई।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्बल-शरीर गाँधीजी की आँखों-आगे अँधेरा छा गया, और वे तलमलाकर नीचे गिर ही रहे थे, कि एक मकान की जाली उनके हाथ आगई। उन्होंने समझ लिया—कि अब जीता घर पहुँचना मेरे लिये असम्भव है !

—और दया और क्षमा के अवतार उस महा-पुरुष ने मन-ही-मन परमात्मा से प्रार्थना की—कि वह इन भूले भाइयों का अपराध क्षमा करदे।

परमात्मा के नाम लेते हुए, गिरते-पड़ते, निस्स-हाय गाँधीजी आगे-आगे जारहे थे, और सैकड़ों बिफरे हुए, नर-पशु गोरे पीछे-पीछे। उस समय का दृश्य देखकर पत्थर-हृदय भी पसीज उठता !—ओफ़!—नृशंसता की पराकाष्ठा !—पशुता की चरम-सीमा !!—कोई बताये, रोम के नीरो, फ्रांस के लुई, और रूस के ज़ार के जुल्म की इसके सामने क्या बिसात थी ?—कोई बताये, ईसा-मसीह के पैरोकार गोरों की दया उस समय किस खेत में चरने चली गई थी ?—कोई बताये, किस देश के इतिहास में एक निर्बल-शरीर, निस्सहाय, निरपराध व्यक्ति पर इस प्रकार ग़ैर-क़ानूनी अनुचित, नृशंस और मनुष्यता-हीन आक्रमण हुआ था !!!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर की माया!—पुलीस-सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० अलेग्ज़ेण्डर की पत्नी सामने से जारही थी। गाँधीजी को वह पहचानती थी। उन्हें इस दशा में देख, उसके मन में स्त्री-सुलभ सहानुभूति और करुणा का उद्रेक हो आया; और वह गाँधीजी के पास आ, अपना छाता उनके ऊपर तान, उनके साथ-साथ बातें करती चलने लगी।

एक गोरे ने चिल्लाकर कहा—"हट जाओ, मैडम, इस कुत्ते के साथ न रहो!—हम इसे मार डालेंगे!"

दूसरे ने कहा—"हम इसकी लाश के टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे!"

तीसरे ने कहा—"हम इसे आठ सौ कुत्तों को चढ़ाकर लाने का मज़ा चखायेंगे!"

पर मिसेस अलेग्ज़ेण्डर ने न तो इन बकवादों पर ध्यान दिया, और न वह वहाँ से हटी-ही!

चलते-चलते मिसेस अलग्ज़ैण्डर ने पूछा—"आप ने अकेले जहाज़ से उतरने का साहस कैसे किया?—क्या आपको नेटाल के वायु-मण्डल की सूचना नहीं मिली थी?"

"मिली थी।" गाँधीजी ने कहा—"मि० एस्कम्ब ने मुझे पत्र लिखकर पहले-ही सूचित कर दिया था,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सलाह दी थी—कि मैं रात को मि० टैटम के साथ चलूँ—"

"फिर ?"

"मि० लाटन—मेरे मित्र—वहाँ गये, और विश्वास दिलाया—कि गोरे तितर-बितर होगये हैं। मैं अपनी ज़िम्मेवरी पर आपको साथ ले चलता हूँ, और वादा करता हूँ—कि मेरे रहते आप पर कोई आँच न आने पायेगी।"

"तो यों कहो—सारे विष के बीज मि० लाटन ने बोये, और उन्हीं के विश्वासघात से—"

गाँधीजी ने चौंककर कहा—"न ! न ! विश्वास-घात क्यों ?"

"फिर क्या ?"

"देखिए—उन्होंने जो वचन दिया था-उसका अक्षरशः पूरा किया। जब-तक वे मेरे साथ रहे, मेरा बाल-बाँका न होने दिया, मगर जब दो गोरे उन्हें आकर ले गये—तो वे मेरे ऊपर हुए प्रहारों के लिये ज़िम्मेवार क्यों ठहराये जायँ ?—बल्कि मैं नहीं कह सकता—मेरे कारण उन्हें क्या तकलीफ़ उठानी पड़ी !"

मिसेस अलेग्ज़ैण्डर ने श्रद्धालु नेत्रों से एक बार गाँधीजी को देखा, और सहसा उनके मुँह से निकल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ा—"यह क्या ?—मसीह ने जन्म ग्रहण किया है ?"

उसकी बात सुनकर इस परिस्थिति में गाँधीजी खिलखिलाकर हँस पड़े।

फिर, एक भारतीय-द्वारा इस दुर्घटना की सूचना पुलिस-कोतवाल मि॰ अलेग्ज़ैण्डर के पास पहुंच गई, और पुलिस का एक दस्ता उन्होंने गाँधीजी के रक्षार्थ भेज दिया।

पुलीस के घेरे में गाँधीजी धीरे-धीरे दिये-चले के बाद पारसी रुस्तमजी के बँगले पर पहुँच गये।

(५)

डाक्टर ने गाँधीजी के लहू-लुहान शरीर की जांच की। अङ्ग-अङ्ग ज़ख़्मी होरहा था।—और कमर की लात!—बस, उसकी न पूछिये—कष्ट के मारे प्राण ओठों-तक आरहे थे। इतने आदमी मौजूद थे!—तौभी वे असह्य कष्ट से विह्वल होकर एक बार ज़ोर-से कराह उठे; शिष्टाचार की रक्षा यहाँ उनसे न हो सकी।

बारे, किसी तरह मरहम-पट्टी हुई, और गाँधीजी एक आराम-कुर्सी पर बैठकर धीरे-धीरे बातें करने लगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक देर न बीती थी, कि एक नौकर आकर बोला—"एक आदमी आपसे मिलना चाहता है।"

गाँधीजी ने उसे बुलाया। बड़ा-सा पग्गड़ बाँधे, मुसल्मान व्यापारी मालूम होता था, उसने टूटी-फूटी हिन्दी में कहा—"आपसे दो मिनट एकान्त में मिलना चाहता हूँ।"

लोग उठकर दूसरे कमरे में जाने को तैयार हुए, पर सहसा गाँधीजी खुद खड़े होगये, और बोले—"न, न, आप सब लोग क्यों कष्ट करते हैं? मैं अभी आता हूँ!"

—कहकर गाँधीजी लोगों के रोकते-रोकते उठकर बाहर चले गये।

उस आदमी ने एकान्त में जाकर कहा—"देखिये मेरा नाम 'हैमरड' है, मुझे मि० अलेग्ज़ैण्डर ने भेजा है,—पहले यह देखिये—"

—कहकर उसने खिड़की के रास्ते सड़क पर का दृश्य दिखाया।

गाँधीजी ने देखा—सैकड़ों उत्तेजित गोरों की भीड़ जमा है, और बीचों-बीच मि० अलेग्ज़ैण्डर खड़े होकर कुछ बोल रहे हैं।

हैमरड ने कहा—"देखिये, ये लोग पारसी रुस्तम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो के मकान को आग लगा देना चाहते हैं, मि० अलेग्ज़ैण्डरने मुझे आपके पास इसलिये भेजा है, कि अगर आप अपने मित्र, और उसके बाल-बच्चों की तथा खुद अपनी ख़ैर चाहते हैं तो, आप मेरे साथ इसी वक़्त नीचे गोदाम में से होकर, एक हिन्दुस्तानी-सिपाही के वेश में निकल चलें। गली के मुहाने पर गाड़ी तैयार है। भीड़ बे-क़ाबू होती जा रही है।—अगर आपने ज़रा-सी भी देर की—तो यह मकान, और इसके सारे निवासी ग़ारत हो जायँगे। कहिये, आप मुझ पर विश्वास तो करते हैं?"

गाँधीजी ने कहा—"भाई, तुम पर तो मैं विश्वास करता हूँ—परन्तु एक बात मेरी समझ में नहीं आती।"

"क्या?"

"अगर मैं यहाँ से चला जाऊँ—और गोरों ने प्रिय रुस्तमजी को किसी प्रकार की हानि पहुँचाई—तो मैं बड़ा स्वार्थी होऊँगा। अगर मैं अपने मित्र की कुछ सहायता न कर सकूँ—तो कम-से-कम अन्त-तक उनके साथ तो रहूँ।"

कर्मचारी 'हैमरण्ड' ने जल्दी-से कहा—"इसकी तर्कीब कोतवाल साहब ने सोच ली है।"

"क्या?"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब आप चले जायेंगे, तो भीड़ से कहेंगे—कि क़ानून के रक्षार्थ गाँधी को उन्होंने इस प्रकार चोरी-से और जगह भेज दिया है, और अगर वे (गोरे) इस बात पर विश्वास न करें—तो तीन-चार आदमी भीतर मकान में जाकर उन्हें देख सकते हैं।—अगर गाँधी मिल जाय, तो उसे पकड़ लें, वर्ना भले आदमियों की तरह चले जायँ। उन्हें उम्मीद है, कि इस कौशल से सरे-दस्त उपद्रव शान्त हो जायगा।"

बात ठीक थी, और गाँधीजी की समझ में आगई, उसी समय 'हैमरड' से सिपाही की पोशाक माँगकर उन्होंने पहिनी, और अपने ज़ख्मों की कुछ पर्वाह न कर, उसके साथ निकल चले।

गोदाम में से होकर, ये लोग बाहर आये, और भीड़ के पास से गुज़रकर पुलिस-चौकी की तरफ़ चले। उस भीड़ को भला क्या पता—उनका लक्ष्य उनकी बगल से गुज़रकर जा रहा है!—वे तो मि० अलेग्ज़ैरडर का नमकीन लेक्चर और चटपटी कविता सुनने में व्यस्त थे!

मि० अलेग्ज़ैरडर उन्हें अपना अनर्गल भाषण सुना रहे थे—

"देवियो, और सज्जनो!……न, न, सज्जनो!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ठहाका) इस गाँधी ने बड़ा भारी गुनाह किया है!—हज़ारों हिन्दुस्तानियों को लाकर उसने दक्षिण-अफ़्रीका पर क़ब्ज़ा जमाने की सोची है। मगर हम इस चूहे को कभी ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे।—क्यों आपका क्या इरादा है?"

चारों तरफ़ से आवाज़ आई—"नहीं, कभी नहीं!"

तब कोतवाल अपनी कविता सुनाने लगे—

"आओ भाई, उस गांधी को आज पकड़कर लायें,
लाकर झटपट इसी पेड़ से फांसी पर लटकायें।
नौ सौ हिन्दुस्तानी लाया, पाप किया है भारी,
मार-मार कर चांद फोड़ दें, शेख़ी भूले सारी।"

साथ ही चारों तरफ़ से "हियर! हियर!!" और "वन्स मोर!" की आवाज़ें आने लगीं।

पर जब गाँधीजी के सकुशल पुलीस-चौकी पर पहुँचने का समाचार कोतवाल साहब को मिला,—तो उन्होंने अपनी चालाकी का हाल हँसते हँसते गोरों की भीड़ में सुना दिया।

फिर उसी कौशल से जो हैमण्ड ने गाँधीजी को बताया था, हारकर, दाँत पीसते-पीसते सब गोरे विदा होगये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६)

गाँधीजी पर इस अपमान-पूर्ण मार की ख़बर भारतवर्ष में पहुँची, और वहाँ इस ख़बर ने आग-सी लगादी, और यह एक राष्ट्रीय प्रश्न बन गया। अख़बारों में टिप्पणियाँ निकलीं, लेक्चर हुए, और सभाओं में प्रस्ताव पास हुए।

तब भारत के तत्कालीन वायसराय चेम्बरलैन ने भारतीयों के आँसू पोंछने के लिये नेटाल-सरकार के पास तार भेजा—कि "गाँधीजी को न्याय मिले, और उन पर हमला करने-वालों पर मामला चलाया जाय!"

पर उन दया के अवतार, क्षमा-शील महा-पुरुष गाँधीजी ने क्या किया?—क्या आप यह सुनकर अपने कान पवित्र न करेंगे?

आप पढ़ चुके हैं—मि० एस्करब न्याय-विभाग के मन्त्री थे। उन्होंने गाँधीजी को बुलवाकर मि० चेम्बरलेन का तार उन्हें दिखाया, और बोले—"आप पर जो नृशंस हमला हुआ है, मैं उसके लिये दुःख और लज्जा का अनुभव करता हूँ। खुशी की बात है—कि आपकी जान पर जोखम नहीं आई। मगर विश्वास करिये, मेरे मन में स्वप्न में भी यह धारणा या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा नहीं हुई—कि आपको, या आपके देश-वासियों को ज़रा-भी चोट पहुँचे। मैंने पहले-ही हरकर आपसे रात को उतरने के लिये कहला भेजा था।—मगर मि० लाटन के कहने से आप न माने—"

"ओह! नहीं," गाँधीजी ने कहा—"उसकी जिम्मेदारी मुझपर है, मि० लाटन का कोई दोष नहीं।"

"खैर, यही सही" मि० एस्कम्ब ने कहा—"हम मि० चेम्बरलेन का अनुरोध मानते हैं, और उचित समझते हैं कि हमला-वरों पर मुकदमा चलाया जाये। कहिये—आप आक्रमणकारियों को पहचान सकेंगे?"

"शायद दो-चार को पहचान दूँ!"—गाँधीजी ने जल्दी से कहा—"मगर देखिये न—मैं आक्रमण-कारियों को ज़रा-भी दोषी नहीं मानता।"

"दोषी नहीं मानते?"—मि० एस्कम्ब ने साश्चर्य कहा—"तो फिर......?—आपका मतलब क्या है?"

"मतलब यह—" गाँधीजी बोले—"कि दोषी गोरों की वह कमेटी है, जिसने उन लोगों को उत्तेजित किया—और क्षमा कीजिये, उनसे भी अधिक दोषी आप हैं, जो उस कमेटी के अध्यक्ष थे, और जिन्होंने मेरे विषय में जान-बूझकर भ्रम फैलाया।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मि० एस्कम्ब सिटपिटा गये, और सूखे मुँह से मुस्कराकर बोले—"तो इसके माने हैं—आप मुझपर मुकदमा चलाना चाहते हैं ?"

"ना !—वह बात नहीं," गाँधीजी ने कहा—"जब मैं जहाज़ से उतरा था—तो निश्चय कर लिया था—कि अगर मुझपर हमला हुआ, तो मैं बुरा न मानूँगा। बस, अब भी मैं अपने उस निश्चय पर अटल हूँ !"

मि० एस्कम्ब के मुँह से आश्चर्य की एक चीख निकल गई और उन्होंने पूछा—"क्या मतलब ?"

"यानी," गाँधीजी बोले—"मैं किसी पर मुकदमा चलाना नहीं चाहता। अगर आक्रमण-कारियों ने सचमुच कोई पाप या अनुचित कर्म किया है—तो मेरा विश्वास है—वे आगे-पीछे ज़रूर अपनी भूल पर पछतायेंगे।—और यही उनके अपराध का समुचित दण्ड होगा।"

मि० एस्कम्ब ने सहसा गाँधीजी का कन्धा पकड़ कर कहा—"माँ, मरियम !—यह कौन है !"

—फिर मिनट-भर उसी तरह उनकी तरफ़ ताकते रहकर मि० एस्कम्ब बोले—"क्या आप मुझे इस मज़मून का एक पत्र लिखकर दे सकते हैं—कि आप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमला-वरों पर मुक़दमा चलाना नहीं चाहते, ताकि मैं उसे मि० चेम्बरलेन के पास भेजदूँ?"

"अवश्य, अभी लीजिये!—" कहकर गाँधीजी ने फ़ौरन् पत्र लिख दिया।

मि० एस्कम्ब के मुँह से निकल पड़ा—"ईश्वर करे तुम्हें सफलता हो।"

याद रहे, ये गाँधीजी के कट्टर विरोधी के शब्द थे!!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा खण्ड

(१)

हम इस पुस्तक के दूसरे खण्ड का प्रारम्भ, पहले खण्ड की दुर्घटना के दो वर्ष बाद, जोहान्सबर्ग की सकड़ी गली के अँधेरे घर से करेंगे।

घर, बाहर से जितना गन्दा, पुराना, और ख़राब दिखाई देता है, भीतर से उतना-ही कुशादः, साफ़ और आलीशान है। कमरे बड़े, छतें ऊँची, दीवारें साफ़, खुला हुआ चौक—यही मकान की खूबियाँ थीं।

एक बड़े कमरे में रोशनी होरही थी; बाक़ी सारा मकान घुप्प-अँधेरे में छिपा हुआ था। इस प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में एक बहुत-बड़ी गोल टेबुल के चारों तरफ़ पन्द्रह आदमी कुर्सियों पर बैठे थे।

इन में से तीन हिन्दुस्तानी थे, बाक़ी सब गोरे। हाँ, गोरों में से हम दो आदमियों को पहचान सकते हैं—एक टामसन, दूसरा हर्बर्ट।

इस गुप्त-समिति का परिचय देने के लिये कुछ कह दें—

जोहन्सबर्ग में सन् १८९९ तक बोअर-राज्य था। परन्तु यहाँ की सोने की खानों के मालिक अंग्रेज़ थे, और वे यह सहन नहीं कर सकते थे, कि कोई विदेशी-सरकार उन पर शासन करे। बस, इन्होंने डाक्टर जेमीसन के साथ षड्यन्त्र किया, और उन्हें एक खास तिथि पर जोहान्सबर्ग पर धावा बोल देने के लिये तैयार किया।—और यह तय हुआ, कि जिस दिन डाक्टर जेमीसन जोहान्सबर्ग पर चढ़ाई करें, उसी दिन भीतर, शहर में, खानों के अँग्रेज़ मालिकों के द्वारा विद्रोह कर दिया जाय।

जोहान्सबर्ग में भारतीयों की भी काफ़ी संख्या थी। अँग्रेज़-लोग 'मतलब के लिये गधे को बाप' बनाने में कभी नहीं चूकते, अतएव उन्हें डर हुआ—कहीं भारतीय हमारे विद्रोह का विरोध न करें!—बस, उन्होंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीयों के कुछ मुखियाओं को अपने साथ मिलाया।

आज इन लोगों ने इसी सम्बन्ध में मशविरा करने के लिये, समिति की अन्तिम बैठक बुलाई है।

मि० हर्बर्ट ने खड़े होकर कहना शुरू किया—"आज हम लोग किस लिये इकट्ठे हुए हैं?—इसलिये कि अपना आगामी दो दिनों का कार्य-क्रम स्थिर करें। क्योंकि परसों डाक्टर जेमीसन जोहन्सबर्ग पर धावा बोल देंगे—"

क्षण-भर ठहरकर फिर बोला—"बोअरों के शासन में हमपर जो नित्य-नई विपत्तियाँ आती हैं, और हमें जो असुविधायें हैं, वे आप लोगों से छिपी नहीं हैं, और बार-बार आप लोगों को बताई जा चुकी हैं। हमारे भारतीय भाइयों को भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है,—उन्हें खेती और व्यापार के लिये अच्छा स्थान नहीं मिलता, उन्हें और हमें बिना परवाने के इधर-उधर नहीं हिलने दिया जाता।—सारांश, हम लोग बोअरों के राज्य में सब प्रकार तिरस्कृत और दुःखी होरहे हैं, जो हम कभी सहन नहीं कर सकते!

"बस, सब तैयारी होगई है। परसों रात को डाक्टर जेमीसन अपनी सेना के साथ धावा बोलेंगे, और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी समय हमें विद्रोह खड़ा कर देना होगा।—बोअर-लोग शासन की ज़रा योग्यता नहीं रखते, यह इसले-ही सिद्ध होता है—कि उनके विरुद्ध इतनी भारी तैयारी हमने करली है, तो भी उनके कान पर जूँ नहीं रेंगी, और वे ग़फ़लत की नींद में सो रहे हैं।

"ख़ैर, सारी परिस्थिति आपके सामने है। परसों रात को हमें क्या--क्या करना है इसका कार्य-क्रम तीन आदमियों की कमेटी ने—जो आपने सभा के पिछले अधिवेशन में बनाई थी—तैयार कर लिया है, उसे अभी आपको सुनाया जायगा।—मगर इस से पहले, यहाँ उपस्थित, अपनी जाति के गण्य-मान्य नेता, अपने भारतीय भाइयों के मुँह से मैं कुछ सुनना चाहता हूँ!"

हरिभाई प्रेमजी नाम के एक गुजराती-सज्जन खड़े हुए, और बोले—"हम लोगों को जो कुछ कहना था, पहले-ही कह चुके हैं। हमारी जो कठिनाइयाँ हैं—हम बता चुके हैं। आपकी अपेक्षा हमारी कठि-नाइयाँ बहुत-अधिक और असह्य हैं। आपके उद्योग में सहयोग देना सब प्रकार से हमारा कर्त्तव्य है।—पहले-तो आपने तीन पौंड का कर, और अन्य सब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपत्तियों को हम पर से उठा देने का वचन दिया है, और व्यापार करने, आने-जाने—इत्यादि सब प्रकार की स्वतन्त्रता देने को आप प्रतिज्ञा-बद्ध हुए हैं, दूसरे, हम बृटिश-प्रजा हैं, हमारी जन्म-भूमि पर अंग्रेज़ों का शासन है, उस नाते भी आपका साथ देना हमारा धर्म है। बस, अगर आप लोग अपने वचन पर दृढ़ हैं, तो हमें जो कहा जाय, उसे करने में कोई आपत्ति नहीं है।"

अब एक मोटा अंग्रेज़, जिसने सोने की खानों की बदौलत करोड़ों रुपया पैदा किया था, उठा, और बोला—"मैं अपने अंग्रेज-बन्धुओं की तरफ़ से भारतीय-भाइयों के समक्ष की गई प्रतिज्ञा को एक बार पुनः दोहराता हूँ, और विश्वास दिलाता हूँ—कि ट्रान्सवाल पर बृटिश-राज्य होते-ही उन्हें सब प्रकार की स्वतंत्रता दे दी जायगी, और तीन पौंड का कर, परवाना लेने की अनिवार्यता,—इत्यादि सब प्रतिबंध उठा लिये जायेंगे!—तथा और भी जैसी स्वतंत्रता वे चाहेंगे, उन्हें मिलेंगी।"

अहमदअली विलायतअली नाम के एक सज्जन ने उठकर धन्यवाद दिया। और इसके बाद मि० हर्बर्ट की कमेटी का तैयार किया हुआ कार्य-क्रम सभा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पढ़कर सुनाया गया।—किस प्रकार बोअर पहरेदारों की हत्या की जाय, किस प्रकार जेल से अंग्रेज़-क़ैदियों को मुक्त किया जाय, किस प्रकार बोअरों के सचिव-गृह पर यूनियन-जैक फहराया जाय? इत्यादि-इत्यादि।

बड़ी रात तक यह सब होता रहा। जब यह सब हो चुका, तो षड्यन्त्र समिति के सदस्य एक दूसरे की शुभ-कामना करते खड़े होगये।

परन्तु हैं!—यह क्या?—लोहे के मज़बूत दर्वाज़े की भीतर की साँकल खोली गई—तो देखा गया—दर्वाज़ा बाहर से बन्द है!

इतने में बाहर से किसी ने डच-भाषा में कड़ककर कहा—"बस, सब लोग चुपचाप वहीं रहो। तुम सब बोअर-सरकार के क़ैदी हो!!"

दो-तीन कमज़ोर-दिल गोरों की लम्बी चीखें उस बड़े-भारी कमरे की हवा में मिल गईं!!

(२)

जोहान्सबर्ग के अंग्रेज़ बच्चों ने बोअर-प्रेसीडेण्ट क्रूगर को जैसा मूर्ख समझा था, असल में वे उससे बहुत-अधिक बुद्धिमान थे। गोरों के इस सारे षड्यन्त्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पता उन्हें यथा-समय लग गया था।—और किस तरह समिति के समस्त सभासदों को पकड़ लिया,गया वह आप पढ़-ही चुके हैं।

अब इसके बाद कैसे उन्होंने चुपचाप डा० जेमीसन के मुक़ाबले में फ़ौज भेजकर उनके दाँत खट्टे किये, और उन्हें जीता पकड़ मँगाया, और कैसे खानों के करोड़पति मालिकों और डा० जेमीसन पर मुकदमा चलाकर उन्हें फाँसी का दण्ड सुनाया, और कैसे मि० चेम्बरलेन ने तार भेजकर इन अपराधियों की जाँ-बख़्शी की भीख माँगी—इन सब इतिहास-प्रसिद्ध बातों का सविस्तर वर्णन् इस उपन्यास में नहीं किया जा सकता। अन्त में, मि० चेम्बरलेन की विनती स्वीकार कर, उदार और नीतिज्ञ प्रेसीडेण्ट क्रूगर ने सब अभियुक्तों को क्षमा प्रदान करदी!

पर गोरे अपनी आदत कैसे छोड़ दें?—फिर षड्यंत्र आरम्भ हुए, फिर चालें शुरू हुईं, और फिर युद्ध के बादल मँडराने लगे!

बोअर और अंग्रेज़—दोनों-ही—युद्ध की तैयारियाँ कर रहे थे। प्रेसीडेण्ट क्रूगर ध्यान-पूर्वक सारी परिस्थिति समझ रहे थे।

—और आखिर—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन 'पहले मारे, सो जीते' की उक्ति के अनुसार प्रेसीडेण्ट क्रूगर ने अंग्रेज़ी इलाकों को विजय करने के लिये अपनी फ़ौज आगे बढ़ा दी। उसी साल अर्थात् १८९९ में अंग्रेज़ बोअरों का यह भयानक संग्राम आरम्भ होगया, और बोअर-सेना अंग्रेज़ी राज्य के तीन शहरों – लेडिस्मिथ, किंबरली और मेफ़ेकिंग का मुहासरा कर लिया।

प्रसिद्ध युद्ध-विद्या-विशारद लार्ड किचनर ने बोअरों का सामना किया। कई मास-तक घोर संग्राम होता रहा। बोअर-लोग जी छोड़ कर लड़े, पर अंग्रेज़ों के भाग्य का सितारा अपनी पूरी तेज़ी पर था, और प्राण-पण से कोशिश करने पर-भी आज़ादी के दीवाने हार गये। किंबरली, मेफ़ेकिंग, और लेडिस्मिथ-इत्यादि शहर तो छुड़ा लिये गये, साथ-ही ट्रान्सवाल और आरेंज-फ्री-स्टेट—बोअर-राज्यों पर भी अंग्रेज़ों का यूनियन जैक फहराने लगा।

इन दिनों नेटाल के भारतीय, गाँधी जी के नेतृत्व में अपने अधिकारों के लिये लड़ रहे थे। अगर वे चाहते, तो गोरों की इस विपत्ति में उनसे चाहे-जो ले सकते थे, परन्तु शान्ति और दया के अवतार गाँधीजी ने कहा—"अंग्रेज़ हमारे शत्रु नहीं हैं, कि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम राजनीति की चाल चलकर उनकी मजबूरी से अनुचित लाभ उठावें।—हमारा युद्ध धर्म-युद्ध है, इसलिये विपत्ति में हमें उन लोगों की सहायता करनी चाहिये—जिनकी प्रजा होने के नाते-ही हम अपने हक़ों का मुतालबा करते हैं!"

और यह भी समझ लें—कि बोअरों के सम्बन्ध में गाँधीजी के व्यक्ति-गत विचार—बल्कि समस्त भारतीयों के—सहानुभूति-पूर्ण थे, मगर गाँधीजी ने और उनके साथ-ही समस्त भारतीयों ने उनके इस तर्क को मान लिया—कि "कर्त्तव्य के सामने हमें अपने व्यक्ति-गत विचारों का बलिदान कर देना चाहिये!"

आज अपनी सभ्यता, गौरव और उदारता पर नाज़ करने वाले योरोप के इतिहास में कहीं ऐसी उदारता का उदाहरण आपने देखा?

बस, गाँधीजी की प्रेरणा और उनके अध्यवसाय से ११०० भारतीयों की एक बड़ी टुकड़ी युद्ध के घायलों की सेवा शुश्रूषा के लिये अंग्रेज़ फ़ौज के साथ चली।

उस समय उन धूर्त गोरों ने जिस प्रकार भारत की स्तुति की, उसे सुनकर हर्ष-से रोमाञ्च होजाता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है !—मगर—

—काम निकल जाने के बाद, इन बेईमानों ने भोले-भाले भारतीयों को जैसा अँगूठा दिखाया, उसे देखकर, संयत-से-संयत भारतीय की नस-नस फड़कने लगती है। केवल एक-ही पुरुष ऐसा था—जिसने महीनों गोरों के सड़े ज़ख़्म साफ़ किये, पचास-पचास मील की पैदल यात्रा की, गोली-गोलियों के बौछार में घुसकर घायलों को बचाया, और जिसके कारण अंग्रेज़ों को भारतीयों की यह अमूल्य और सामयिक सहायता प्राप्त हुई थी,—और जिसने—गोरों की बेईमानी और विश्वास-घात देखकर एकबार 'उफ़!'-तक न की, और फिर नये सिरे से अपने काम में जुट गया।

यह व्यक्ति महा-पुरुष गाँधी जी थे !!

(३)

जब अंग्रेज़ों ने बोअरों पर विजय पाई, तो गाँधी-जी गोरों की कृतघ्नता की कल्पना न करके भारत चले गये। उन्होंने सोचा—भारतीयों की सेवा और सहायता-स्वरूप अवश्य उन्हें अभीष्ट अधिकारों की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति होजायगी, परन्तु तार पाकर उन्हें शीघ्र-ही दक्षिण-अफ्रीका आना पड़ा।

देखा—तो सब मामला गड़बड़!—वे लम्बे-चौड़े वादे, वह क्षणिक और अस्थायी आदर-मान, वह कृत्रिम और दुष्टता-पूर्ण खुशामद—सभी निष्ठुरता-पूर्वक भुला दी गई थीं।—और विश्वास-घाती, झूठे, अंग्रेज़ों ने निस्सहाय, भोले-भाले भारतीयों पर अन्याय का वीभत्स कुचक्र चला रक्खा था!!

ट्रान्सवाल में भारतीयों ने अच्छी ज़मीनें खरीदीं, तो धूर्त्त और निर्लज्ज गोरों ने सन् १८८५ ई० का, बोअर-राज्य के समय का प्रतिबन्धक क़ानून सामने ला रक्खा, और ज़मीनें रजिस्टर करने से इन्कार कर दिया!

और भी सुनिये—भारतीयों के लिये ट्रान्सवाल में घुसना तभी सम्भव था, जब वे-नव-निर्मित 'एशियाटिक-डिपार्टमेण्ट' से परवाना लेलें। इस 'एशियाटिक-डिपार्टमेण्ट' के कर्मचारी पूरे रिश्वत-खोर, डाकू, और अव्वल दर्जे के बदमाश थे। ग़रीब भारतीयों को सब प्रकार से दबाकर उनका रुपया लूटना-ही उनका एक-मात्र उद्देश्य था।—शहर के भीतर व्यापार करने की बात दूर रही, जो व्यापारी वहाँ मौजूद थे,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें भी निकाल-बाहर करने की कोशिश की जाने लगी !

अब गाँधीजी के प्रति कृतघ्न गोरों के व्यवहार की बात सुनिये। मि० चेम्बरलेन उन दिनों ट्रान्सवाल में आये हुए थे। भारतीयों के डेपूटेशन ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की, पर आपका हृदय क्या यह सुनकर विदीर्ण न हो जायगा—कि ट्रान्सवाल के गोरे-अधिकारियों के कुचक्र से मि० चेम्बरलेन ने उनसे मिलने से इन्कार कर दिया ?

मगर हुआ कुछ भी नहीं !—पराये देश को रोटी समझकर भूखे कुत्तों की तरह झपटने-वाले अंग्रेज़ों की मनो-वृत्ति कैसी होगी ?—कल्पना तो कीजिये।—भला माँगने से, या प्रेम-भाव से, या दीन भाव से इनकी लोहे की मुट्ठी खोलकर कुछ लिया जा सकता है ?—ओफ़ !—असम्भव !—इस तोता-चश्म, धूर्त्त-नीतिज्ञ जाति का विश्वास करना-ही अपने पैर कुल्हाड़ी मारना है !!

अधिकार तो मिलने दर-किनार—भारतीयों को ट्रान्सवाल से बाहर खदेड़ देने के लिए एक नया आविष्कार हुआ, कि प्रवेश-पत्र के साथ प्रत्येक व्यक्ति का चित्र ले लिया जाय, ताकि उसके सिवा कोई दूसरा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका उपयोग न करे सके।

जोहान्सबर्ग के खान-मालिकोंकी समिति अभी टूटी नहीं थी, मगर पहिले गुप्त-समिति थी, अब एक प्राइवेट-क्लब होगया। वे तीन भारतीय भी अभी-तक उसके मेम्बर थे, मगर गोरों की आँखों में वे अब वे काँटे की तरह खटकते थे।

एक दिन हरिभाई-प्रेमजी ने अपने दुःखों का रोना रोया, और कहा—"आप लोगों की तरफ़ से विश्वास दिलाया गया था—कि ट्रान्सवाल पर विजय होते-ही......"

बीच-ही में एक गोरा कड़ककर बोला—"आप यह क्या झगड़ा ले बैठे!—आप जानते हैं, अब यह क्लब है; कोई राजनैतिक संस्था नहीं है?"

हरिभाई ने भलमनसी से कहा—"मगर सदस्य तो सब वही हैं!"

एक और महाशय बोले—"अब हमारा शासन के सम्बन्ध में कोई मूल्य नहीं है। आप जानें, सरकार जाने!"

अहमदअली ने कहा—"मगर आप हमारी और तरह तो मदद कर सकते हैं!"

एक नौ-जवान गोरे ने खड़े होकर कहा—"हम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे नौकर हैं, जो मदद करते फिरें?"

तीसरे भारतीय—जो अब तक चुप बैठे थे—ज़ोर-से मेज़पर हाथ मारकर खड़े होगये, और सुर्ख़ चेहरा बनाकर बोले—"धिक्कार है!—उफ़! अब नहीं सहा जाता!!"

—कहकर वे क्लब-घर से बाहर होगये।

अब की बार उद्दण्ड टामसन खड़ा हुआ, और ज़ोर-से बोला—"ये काले हिन्दुस्तानी असभ्य हैं, बदमाश हैं; हमने इन्हें व्यर्थ क्लब-घर में आने दिया।—इन्हें अभी मारकर निकाल दो!!"

हरिभाई ने सहमकर कहा—"ठहरिये—"

परन्तु सहसा टामसन ने भरी हुई सोडे की बोतल उठाकर उनके माथे पर फेंक मारी, और दूसरे-ही क्षण "मारो! मारो!" कहता हुआ उनपर टूट पड़ा।

—तब उस क्लब-घर में, उन दर्जन-भर बलिष्ठ गोरों ने, दो निर्दोष, निर्बल, निस्सहाय भारतीयों की जैसी भयानक दुर्दशा की, उसका वर्णन हमारी लेखनी से न कराइये,—अगर किया—तो हमारा भारतीय हृदय फट जायगा!—बस, यह समझ लीजिये—कि गिरते-पड़ते घर पहुँचकर उन दोनों ने किसी प्रकार अपने प्राण बचाये थे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु इस भयानक दुर्व्यवहार का रहस्य आज कौन जानता है?—और भारतीयों के कष्ट में रहस्य भी होसकता है—इसकी कल्पना भी वहाँ कौन मदान्ध राज कर्मचारी करता?

(४)

परन्तु शान्ति, विवेक, और साधुता के अवतार उस महा-पुरुष ने क्या किया?—उसने कहा—"हमारे मन में कपट नहीं है, हम शान्ति के साथ रहना चाहते हैं, लड़ना-झगड़ना हमारी प्रकृति के विरुद्ध है; अतएव यदि अंग्रेज़ इसी में सन्तुष्ट होते हैं, तो हम उनके कथनानुसार परवाने लिये लेते हैं!"

—और तब उस सत्य-मूर्त्ति की इस पुकार पर सारे ट्रान्सवाल-निवासियों ने गोरों की इच्छानुसार नये परवाने लेलिये।

पर गोरे तो भारतीयों की शान्ति से प्रसन्न नहीं थे।—वे तो उनके क्रोध की बाट देखते थे—जिससे पानी-पीते भेड़िये की तरह व्यर्थ के बहाने पर भारतीयोंको बकरी के बच्चे की तरह कुचलकर फेंक दें।—अस्तु, इनका क्रोध प्रज्वलित करने के लिये उन्होंने और कुचक्र रचा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९०६ का साल था। ट्रान्सवाल में परवानों की रद्दो-बदल होकर ही चुकी थी, कि नेटाल में जुलू-नामक हब्शियों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया ! विद्रोह क्या—यों समझिये, अपने आत्म-सम्मान पर निरन्तर असह्य और वीभत्स धक्का वे सहन न कर सके, और प्रतीकार का उपाय सोचने लगे।

बस, निर्दयी अङ्गरेज़ों ने जैसी बे-दर्दी से उन बेचारे निरस्त्र जुलूओं को भूना—उसे सुनाना हमारी पुस्तक का विषय नहीं, हमें तो यह कहना है, कि गाँधीजी ने—ऐसी विपत्ति, और अपने ऊपर होने-वाले घोर अन्याय की उपेक्षा कर, अङ्गरेज़ घायलों के लिये, अपने-सहित २५ भारतीयों के एक दल की सेवायें पेश कीं। भला इससे कब इन्कार ?

गाँधीजी अपने साथियों-सहित छः हफ्ते-तक बराबर अङ्गरेज़-सेना के साथ जङ्गल-पहाड़ों में मारे-मारे फिरे, भूख-प्यास-नींद—सब का कष्ट सहा, वर्षा, धूप, ठण्ड—किसी की चिन्ता नहीं की, और पुरस्कार मिला—नेटाल-गवर्नर का एक धन्यवाद का तार !—

और ट्रान्सवाल में ?—

वहाँ ग़रीब भारतीयों का गला रेतने वाली-एक नई छुरी पैनी की जा रही थी !!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

थियेटर-हॉल खचाखच भरा था। मञ्च पर गाँधीजी, अब्दुलग़नी, तैयब सेठ, और जोशीले सेठ हाजी हबीब थे।

श्रोताओं में सब जातियों के भारतीय थे।

गाँधीजी ने खड़े होकर कहा—"भाइयो, हम पर जो ज़्यादतियाँ अब-तक हुई हैं—वे आपसे छिपी नहीं हैं।—अब-तक जो असुविधाएँ हमें थीं, वह कम नहीं थीं, पर अभी हाल में ट्रान्सवाल की धारा-सभा में एक नये क़ानून का मस्विदा पेश हुआ है, जिसके द्वारा भारतीयों की हस्ती-ही मिटा देने की तैयारी है। उस क़ानून का मस्विदा आपने 'इण्डियन ओपीनियन'* में पढ़ा-ही होगा। अब हम लोग यहाँ इकट्ठे इसलिये हुए हैं, कि इस अन्याय-पूर्ण क़ानून के प्रतिकार का कोई उपाय सोचें। मेरा विचार है, कि इस क़ानून को अपने ऊपर लागू होने देने के पहिले तो भारतीयों का मर जाना बेहतर है।—मगर सवाल तो यह है कि—मरें किस तरह?........"

*दक्षिण अफ़्रीका से प्रकाशित होने-वाला भारतीयों का एक-मात्र (साप्ताहिक)-पत्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रोताओं में से किसी ने चिल्लाकर कहा—"गोरों की हत्या करके फाँसी पर लटक जायें!"

गाँधीजी ने कड़ककर कहा—"यह कौन है?—अगर इस बोलने-वाले में लज्जा और भारतीयता का कुछ अंश शेष है, और मेरे व्यक्तित्व में सत्य का कुछ अस्तित्व है, तो—वह इसी-दम उठकर इस सभा-भवन से बाहर चला जाये।"

और आश्चर्य!—असह्य अपमान और लज्जा सहकर भी एक आदमी बाहर चला गया!!

गाँधीजी बोले—"दूसरे का खून बहाकर जो अधिकार या स्वतन्त्रता या राज्य की प्राप्ति की जाय, वह कभी चिरस्थायी नहीं हो सकती। अपनी आत्मा को सहन-शीलता, और अपने व्यक्तित्व को शान्ति की चरम-सीमा पर पहुँचा देने-में ही मैं तो अपनी विजय समझता हूँ। मेरा मत यह है—कि हम इस बिल का विरोध करने में अपनी सारी शक्तियाँ लगा दें, और अगर वह पास-ही हो जाय, जिसकी कि आशा है, तो हमें कभी इस क़ानून को न मानना चाहिये!—और जो-कुछ दुःख हम पर पड़े, उन्हें सहर्ष सहना चाहिये। इस क़ानून को स्वीकार करने से पहिले अगर हमारा सर्वस्व स्वाहा हो जाय, और हमारे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राण भी चले जायँ—तो उत्तम है !"

और कई आदमियों के समर्थन के बाद सेठ हाजी हबीब भी उठ खड़े हुए। उठते ही गर्जकर कहना शुरू किया—"ओफ् !—मेरे भाइयो, मैंने जब से इस बिल का मस्विदा पढ़ा है, मेरे तन-बदन में आग लग रही है !—हमारे नन्हें, दुध-मुँहे बच्चों-तक को परवाना लेना होगा ! कहाँ से ?—उस एशियाई-दफ्तर-से, जहाँ आज दुनियाँ के छटे-बेईमानों का राज्य है, और जो हम हिन्दुस्तानियों को लूटना अपना धर्म समझते हैं ? हमारी औरतों को पर्दा खोलकर उन हरामज़ादों के सामने जाना होगा, और दसों उँगलियों की छाप देकर, अपना सारा बदन दिखाकर ख़ास निशानियों को नोट कराना होगा ! दो रुपये का अदना सिपाही चाहे-जहाँ हमारी इज़्ज़त-उतारने का हक़दार होगा ! हमारा परवाना लेने के लिये गुण्डे पुलिस-अफ़सरों को बे-रोक-टोक हमारे घरों में घुसने की अज़ादी होगी !—ओफ् ! यह अपमान सहन करने के पहले, अगर हम फाँसी लगाकर या कुँए में डूबकर मर जायँ—तो बेहतर है !—क्या कोई ग़ैरत-दार हिन्दुस्तानी इन बेईमान गोरों के हाथ से अपनी औरतों को बे-इज़्ज़त कराना पसन्द करेगा ?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या कोई हया-दार हिन्दू या मुसलमान अपनी औरत को बे-पर्दे करके उन नीच एशियाई-दफ्तर-वालों के पास भेजेगा?—"

श्रोताओं में से आवाज़ें आईं—"कभी नहीं! कभी नहीं!!"

सेठ हाजी हबीब ने कहा—"अगर कोई बदमाश मेरी औरत से परवाना माँगने आवेगा, तो मैं उसे वहीं मार डालूँगा—पीछे चाहे मेरा कुछ भी होता रहे। आप सब को समझ रखना चाहिये, कि हम पर चाहे-जैसी मुसीबतें आयें, हमें सब सहनी होंगी, पर इस क़ानून को हर्गिज़-हर्गिज़ न मानना होगा। हम मर्द हैं, नामर्दों की तरह चुपचाप इस अत्याचार को सहन नहीं कर सकते। बस, मैं अल्लाह-पाक की क़सम खाकर कहता हूँ—कि मैं शरीर के टुकड़े-टुकड़े होजाने पर भी इस क़ानून को नहीं मानूँगा, और आप लोगों से भी मेरी इल्तिजा है—कि आप अल्लाह-पाक की क़स्म खावें!"

तब उस सभा में उपस्थित सब भारतीयों ने खड़े होकर एक-स्वर से क़स्म खाई—कि, हम कभी इस क़ानून के आगे सिर न झुकावेंगे, चाहे हमें जेल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने पड़े, देश छोड़ना पड़े, फाँसी लटकना पड़े, और सब तरह के कष्ट भोगने पड़ें !

उस थियेटर-हॉल से निकलने-वाला प्रत्येक भारतीय उस दिन अपने व्यक्तित्व में एक अभूत-पूर्व और अनिर्वचनीय भारी-पन, एक शुभ संकल्प-पूर्ति का उत्तर-दायित्व, और एक गम्भीर गौरव का अनुभव कर रहा था। वर्षों-पुरानी गोरों की दासता की ज़ञ्जीर जैसे उन्होंने तोड़ डाली थी, और सारी भीरुता, कायरता और दुर्बलता उस दिन मानों नष्ट होगई थी, और हरेक के मन में यह उमङ्ग-भरी धारणा जम गई थी—कि हम गोरों से किसी प्रकार न दबेंगे ! हम गोरों से किसी प्रकार न दबेंगे !!

आख़िर दृढ़ निश्चय में कुछ शक्ति तो होती-ही है ! कुछ समय के लिये क़ानून का प्रचलन रुक गया। परन्तु कुछ दिन बाद-ही जब ट्रान्सवाल को उत्तर-दायी शासन मिल गया, तो सबसे पहले भारतीयों पर वह 'खूनी क़ानून' लगाने की घोषणा की गई।

इधर भारतीयों ने भी जगत् प्रसिद्ध, अभूत-पूर्व 'सत्याग्रह-संग्राम' की घोषणा करदी, और किसी प्रकार भी इस पशुत्व-पूर्ण क़ानून को न मानने की प्रतिज्ञा को दोहराया !

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा खण्ड

(१)

सन् १९०७ की पहली अगस्त का निर्मल प्रभात था। ट्रान्सवाल-भर में आकाश उस दिन साफ़ था, वातावरण स्तब्ध था, और हवा बिल्कुल बन्द! भारतीयों को खदेड़ने, या उन्हें क्रीत-दास बनाने वाले परवाने आज-ही देने शुरू किये जाने वाले थे।—और आज-ही संसार ने इतिहास में अश्रुतपूर्व, अभूतपूर्व-मौलिक—सत्याग्रह का आत्म-युद्ध शुरू होने-वाला था।

सूरज निकलने से पहले—सुबह गजरदम—एक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटे से अहाते में बहुत-से भारतीय स्वयंसेवकों से घिरे हुए गाँधीजी खड़े थे।

उन्होंने कहना शुरू किया—"भाइयो, हमारे सिर पर वज्र-प्रहार की तरह परवाने का खूनी क़ानून घहरा पड़ा है, हम आज अपने पूर्ण आत्म-बल से उसका प्रतीकार करने को उद्यत हुए हैं। यह युद्ध शुद्ध आत्म-युद्ध है, और इसका नाम 'सत्याग्रह' है। हमें जो कुछ करना होगा, प्रार्थना, आग्रह, विनय और धैर्य से करना होगा। इस धैर्य के बदले हम पर मार पड़ सकती है, हमें जेल में भेजा जा सकता है, हमारा अपमान किया जा सकता है, हमें कठोर-से-कठोर दुःख दिया जा सकता है। परन्तु हमें अपना धीरज नहीं छोड़ना होगा, हमें अपने ऊपर जुल्म करने वालों पर क्रोध नहीं करना होगा।—कहिये, आप लोग समझ गये?"

समस्त स्वयंसेवक-सत्याग्रहियों ने कहा—"जी हाँ, समझ गये।"

"देखो" गाँधीजी ने कहा—"संसार के सभी युद्धों से यह सत्याग्रह युद्ध कठिन है। तलवार का बदला तलवार से देकर दुश्मन को मार डालना, या बन्दूक हाथ में होते हुए युद्ध-क्षेत्र में बन्दूक की गोली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मर जाना, बहुत आसान है, पर शारीरिक प्रतीकार करने में कुछ भी समर्थ होते हुए जड़-पदार्थ की तरह मान, अपमान, मार गाली सहना बड़ा कठिन है।—पर याद रखिये--सहन-शीलता में-ही हमारी जीत है, धैर्य्य, क्षमा और त्याग में-ही हमारी सुर्ख़-रुई है,--और इसके विपरीत क्रोध, आवेश या प्रतिहिंसा-ही हमारी सबसे बड़ी हार है! मैं इस बात को दोहराये देता हूँ--कि यह युद्ध अत्यन्त कठिन है, इसे लड़ने-वाला संसार का सबसे बड़ा योद्धा है। अगर कोई स्वयंसेवक अपनी आत्मा को इतना बल-वान नहीं समझता है—कि वह इस युद्ध को लड़ सके तो वह अब भी छुट्टी ले सकता है, परन्तु एक बार युद्ध-क्षेत्र में जाकर पीठ दिखाने-वाला—अर्थात् अपनी आत्मा को दुर्बल बनाने-वाला--याद रखिये-जाति का सबसे बड़ा दुश्मन होगा, और परमात्मा उसको कभी क्षमा न करेगा।......क्या कोई व्यक्ति छुट्टी लेना चाहता है?"

गाँधीजी ने दो मिनट तक उत्तर की बाट देखी—परन्तु कोई कुछ न बोला।—तब उन्होंने आत्मिक-सन्तोष और आनन्द का अनुभव करते हुए कहा—"ठीक है!"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—फिर क्षण-भर ठहर कर बोले—"अब आपकी एक-एक टुकड़ी जोहान्सबर्ग के परवाना देने वाले प्रत्येक दफ्तर के बाहर रास्ते पर जावे। आपका कर्त्तव्य क्या है?—इस सम्बन्ध में मोटी-मोटी बातें मैं आपको, आख़िरी बार बता दूँ—जो भारतीय परवाना लेने आवे, उसके साथ ज़रा भी असभ्यता, या छिछोरापन, या उपहास न करे, और विनय-पूर्वक उसका नाम पूछे। अगर वह नाम न बताये, तो जबर्दस्ती न करे।—फिर वह काग़ज़, जिस पर इस क़ानून की हानियां छपी हुई हैं, उसे देकर उन्हें समझावे। अगर वह आदमी फिर भी न माने, और अपनी सम्पत्ति या अपने व्यापार की हानि के डर से परवाना लेना चाहे, तो सत्याग्रही उसके साथ जाकर उसे दफ्तर पहुँचा दे।—पुलिस के साथ भी उद्दण्डता न करे, अगर पुलिस पकड़े, तो खुशी से अपने को पकड़ा दे।—अगर पुलिस मारे तो चुपचाप मार सहले।—अगर मार न सह सके, तो धीरे-धीरे वहाँ से चला जाय, मार का जवाब देने की कल्पना या चेष्टा कदापि न करे!—बस, ये ख़ास-ख़ास बातें हैं, जिन पर आपको अमल करना होगा।.........सात बजते हैं आप लोग अब अपनी ड्यूटी पर जाइये!!"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

स्वयंसेवक चले गये, तो गाँधीजी गीता का प्रसिद्ध श्लोक—'कार्यं वा साधयेयं, शरीरं वा पातयेयम्' गुनगुनाते हुए,—गुनगुनाते हुए क्यों, बल्कि अत्यन्त कोमल और मीठे स्वर में गाते हुए—उस छोटे-अहाते में इधर-से-उधर टहलने लगे।

शरीर पर एक कमीज़ है, टाँगों में एक धोती है, हाथ दोनों पीछे हैं, और यह महा-पुरुष, परमात्मा का पवित्र और उच्च-तम अंश 'कार्यं वा साधयेयं, शरीरं वा पातयेयम्' गाता हुआ घूम रहा है।

तीन दिन, और तीन रातें, बिना-सोये बिताई हैं, खाने-पीने का होश नहीं है, स्त्री-बच्चों की चिन्ता नहीं है, चमकती हुई प्रैक्टिस को लात मार दी है, स्वास्थ्य किसे कहते हैं—यह भुला दिया है, और यह अद्भुत आत्म-बली, दोनों हाथ कमर के पीछे बाँधे, 'कार्यं वा साधयेयं, शरीरं वा पातयेयम्' गाता घूम रहा है!

चेहरे पर आत्म-बल का अपूर्व तेज है, आँखों में सब कुछ सहने की अद्भुत दृढ़ता है, निर्बल शरीर में मानों एक अनिर्वचनीय ईश्वरीय शक्ति भर गई है, हृदय में जैसे विजय का अलौकिक विश्वास है, और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख से 'कार्यं वा साधयेयं, शरीरं वा पातयेयम् !' निकल रहा है !

मुक़ाबले में जनरल बोथा, और जनरल स्मट्स-जैसे धूर्त्त राजनीतिज्ञ हैं, महान् बृटिश-राज्य है, अनगिनित तोपें, बन्दूकें, और अनन्त धन-शक्ति और प्रभुता है, परन्तु यह धन-हीन, शक्ति-हीन निर्बल-शरीर गाँधी मुट्ठी-भर निरस्त्र, शान्त भारतीयों को लेकर लड़ने चला है, और उस छोटे-से अहाते में इधर-से-उधर घूमता हुआ, मधुर कण्ठ से, यह कठोर सङ्कल्प कर रहा है—'कार्यं वा साधयेयं, शरीरं वा पातयेयम् !'

कैसा अद्भुत युद्ध है ! कैसा अनोखा निश्चय है ! कैसा अलौकिक विश्वास है !

कोई सोचे, क्या ऐसी कल्पना-तक करना किसी मनुष्य का काम है ?

(३)

सात से आठ बज गये, और आठ से नौ, परन्तु गाँधीजी—पता नहीं, किस चिन्ता में निमग्न, भविष्य की किस कल्पना में तल्लीन, अतीत की किस पवित्र-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृति का सुख अनुभव करते हुए—'कार्यं,वा साधयेयं, शरीरं वा पातयेयम्' गाते फिर रहे थे !

सहसा एक स्वयंसेवक बद-हवास दौड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा, और बोला—"ग़ज़ब होगया !"

गाँधीजी ने चौंककर पूछा—"क्या ?"

"कुछ व्यापारी परवाना लेने आरहे थे, रास्ते में कुछ लठ-बन्द आदमी उन्हें मिले—"

"हिन्दुस्तानी—?"

"हाँ, हिन्दुस्तानी;—उन्होंने उन व्यापारियों को पकड़ लिया, और बोले—'अगर परवाना लेने जाओगे, तो तुम्हारा सिर फोड़ दिया जायगा !'—वे व्यापारी वापस लौट गये, और स्थानीय सरकारी-अधिकारी ने सब वृत्तान्त सुनकर सशस्त्र पुलीस के दस्ते साथ एक तोप भी भेजी है, कि वह उन सब आदमियों को गिरफ्तार कर लाये, अगर वे आने में आना-कानी करें, और लड़ने पर उतारू हों, तो तोप पर बत्ती रखकर, या बन्दूक़ों के घोड़े दबाकर सबको समाप्त कर दिया जाय !"

गाँधीजी के मुँह से एक बार "हा हन्त !" निकला, और एकाध अनिवार्य बात पूछकर के वे दो मिनट में तैयार होकर उस स्वयंसेवक के साथ घटना-स्थल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरफ़ दौड़ पड़े !

तीन रातों का जागरण, खाने-पीने की अव्यवस्था, अङ्ग-अङ्ग थकान से शिथिल—और इस दशा में, वह ईश्वर का अंश, एक महान् अनर्थ को रोकने के लिये बिजली की तरह दौड़ पड़ा !!

गज की विपत्ति सुनकर भगवान्, के दौड़ पड़ने की कथा कुछ तथ्य-हीन तो नहीं जान पड़ती !

(४)

एक बहुत-बड़े मकान के सामने कई दर्जन स-शस्त्र गोरे दो क़तारों में खड़े थे। सब के कन्धों पर भरी हुई बन्दूकें थीं, और सामने गाड़ी पर लदी हुई एक छोटी-सी तोप रक्खी थी। उस तोप के पीछे खड़े दो आदमी उसमें गोला-बारूद भर रहे थे, पास-ही इस दल का अङ्गरेज नायक खड़ा था।

गाँधीजी सीधे नायक के पास पहुँचे, और बोले—"सर, यह मोर्चा-बन्दी क्यों हो रही है?"

नायक ने घूरकर गाँधीजी को पहचाना, और दाँत-पीसकर कहा—"ओ, तुम-ही शैतान गाँधी है!—यह सब तुम्हारी शरारत का फल है!!"

गाँधीजी ने निर्विकार भाव से कहा—"सर, आप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूलते हैं।—मैं अपना प्रश्न पुनः दोहराता हूँ।"

"हम इस सामने-वाले मकान को उड़ा देंगे।"

"क्यों?"

"इसमें वागी छिपे हुए हैं।"

"उन्होंने क्या किया है?"

"उन्होंने राज-भक्त प्रजा को विद्रोह के लिये उकसाया है, और वैसा न करने पर जान से मार डालने का भय दिखलाया है।"

"तो आप उन्हें गिरफ्तार कर उन पर मुक़दमा चलाइये।"

"अगर वे आत्म-समर्पण कर दिये होते, तो ऐसा-ही होता। अब वे भीतर जाकर छुप गये हैं, तो इस मकान को-ही हम उड़ा दें—ऐसी-ही पुलिस-कमिश्नर की आज्ञा है।"

"अगर वे अब आत्म-समर्पण करदें—तो?"

"तो—?"

"तो आप व्यर्थ का रक्त बहाने से बाज़ आयेंगे?"

"हाँ···आँ···!"

गाँधीजी आगे बढ़े, और उस दो-मञ्जिले मकान के नीचे जाकर ज़ोर-से बोले—"मैं, गाँधी हूँ; मुझ पर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास करके इस मकान में छिपे हुए व्यक्तियों का मुखिया मेरे पास आवे।"

दो मिनट बाद एक आदमी बाहर आया।

गाँधीजी ने पूछा—"कितने आदमी मकान में हैं?"

"ग्यारह।"

"क्यों छिपे हो?"

"यों-ही!"

"देखो—तुमने आरम्भ में-ही भारतीयों के आत्म-युद्ध को कलङ्क लगाया है, और तुम सारे देश-भाइयों के निकट अपराधी हो। समझे?"

"उस व्यक्ति ने सिर झुका लिया।"

"बोलो—मानते हो!"

उसने जैसे किसी दैवी शक्ति के वशीभूत होकर कहा—"जी हाँ, मानता हूँ।"

"पश्चात्ताप है?"

"जी हाँ, है!"

"अच्छा क़ौम की तरफ़ से मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ, और अनुरोध करता हूँ, कि तोप के गोले से बे-मौत मरने की अपेक्षा जाकर आत्म-समर्पण करदो।"

"वे हमें मार डालेंगे।"

"बला से—"

"लेकिन—"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बस, उनके रहम पर अपने-आपको छोड़ दो। तुम लोगों ने अपराध बड़ा-भारी किया है, मगर गवर्न्मेंएट की इतनी हानि नहीं हुई है, जितनी क़ौम की। क़ौम की तरफ़ से तुम लोगों को क्षमा मिल चुकी है, गवर्न्मेंएट की तरफ़ से इतनी सज़ा न मिलेगी, जितनी तुम सोचते हो।— जाओ देर हो रही है।"

मुखिया भीतर चला गया, और दस मिनट में-ही अपने साथियों-सहित बाहर आगया।

गाँधीजी उनके साथ गोरों के नायक के पास आये, और हँसकर बोले—"अब ये तुम्हारे रहम पर हैं; गिरफ्तार करलो।"

नायक ने क्षण-भर बारह अभियुक्तों की तरफ़ देखा,—और फिर गाँधीजी की तरफ़, और तब उसके मुँह से अनायास निकल पड़ा,—"माँ मरियम! यह कौन है!!"—तब उसने आगे बढ़कर गाँधीजी की तरफ़ अपना दाहिना हाथ बढ़ा दिया, और हँसते हुए बोला—"गाँधी, मुझे दोस्त बनाओगे?"

(५)

अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर—चार महीने बीत गये, चोरी-से, छुपकर, डरकर, दबकर—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३,००० भारतीयों में से कुल ५०० आदमियों ने परवाने लिये। खूब कोशिश की गई, खूब डराया-धमकाया गया, खूब लालच दिखाया गया, मगर न किसी को डिगना था, न डिगा।

आख़िर दिसम्बर में गवर्न्मेंएट ने भयानक दमनास्त्र सँभाला, और ख़ास-ख़ास नेताओं को दो-दो महीने की सादी क़ैद देदीं!

मगर क़ौम जाग चुकी थी।—इन गिरफ्तारियों ने आग पर घी का काम किया।—देखते-देखते चौगुनी तेज़ी से काम होने लगा, धड़ाधड़ गिरफ्तारियाँ होने लगीं, और धड़ाधड़ा जेलें भरने लगीं।

वह महान् व्यक्ति गाँधी, वह पुरुष सिंह गाँधी, वह परमात्मा का अत्यन्त श्रेष्ठ अंश गाँधी जिस दिन जेल में गया, सारी क़ौम मानों हड़बड़ाकर उठ बैठी। सरकार ने सोचा था—सिर कट जाने पर देह निर्जीव होजायगी,—नेता के जेल जाने पर आन्दोलन शान्त होजायगा, पर नहीं, गाँधीजी का व्यक्तित्व, गाँधीजी की आत्मिक शक्ति अदृश्य रूप से सत्याग्रहियों के बीच घूम रही थी, और जेल की सड़ी, अँधेरी और दुर्गन्धित कोठरी में घूम घूम कर गाया हुआ उनका—'कार्यं वा साधयेयं, शरीरं वा पातयेयम्'—मानों किसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदृश्य शक्ति द्वारा जनता के कानों में एक मधुर गुंजार उत्पन्न कर रहा था, और न-जाने किस उज्ज्वल भविष्य का संदेश सुना रहा था !!

क़ैदियों की संख्या बढ़ती चली जारही थी।—आख़िर जेल की वर्दियाँ ख़त्म होगईं, इतने क़ैदियों को बैठे-बैठे खिलाना मुश्किल होगया, जेल-अधिकारियों के लिये प्रबन्ध करना मुश्किल होगया।

अब कड़ी क़ैद शुरू हुई। मगर आग पूर्ण वेग से धमक उठी थी। सत्याग्रही क़ैदियों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ने लगी। संसार के कान खड़े हुए। महा-धूर्त्त राजनीतिज्ञ जनरल स्मट्स की आँखें खुलीं।

(६)

जनरल स्मट्स और गांधीजी मिले। इस समय जनरल-साहब के सौजन्य का नाटक कोई देखता—तो उन्हें बिना-धिक्कारे न रहता। वह तमतमाता चेहरा, वह क्रुद्ध चेष्टा, वह गरजता हुआ स्वर—सब-न-जाने कहाँ चला गया था ! खड़े होकर गाँधीजी से हाथ मिलाया, और हँसते हुए बोले—"मि० गाँधी, मैं सब से पहले आपको इस बात पर मुबारकबादी देता हूँ, कि नेताओं के क़ैद होने पर भी आपके अनु-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यायी शान्त और दृढ़ रहे !"

भोले-भाले गाँधीजी ने बालकों के से कोमल स्वर में कहा—"श्रीमान्, इसका कारण यह है—कि हमारा युद्ध 'सत्य' पर निर्भर है।—और जो युद्ध सत्य और सरलता पर अवलम्बित है, उसका हरेक सिपाही नेता है, और एक नेता, या एक सिपाही भी जब-तक बाक़ी बचता है, तब-तक विजय निश्चित् है—ऐसा मेरा विश्वास है।"

गाँधीजी की आँखें बचाकर जनरल स्मट्स ने निचला ओठ दाँत से काटा, और मुस्कराहट का प्रदर्शन करते हुए बोले—"ख़ैर मुबारकबादी ख़त्म हुई, अब मैं थोड़े में यही कहना चाहता हूँ—कि आप अपना आन्दोलन ख़त्म कीजिये।"

गाँधीजी ने कहा—"खूनी क़ानून के रद्द होते-ही हमारा आन्दोलन ख़त्म होजायगा—यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ।"

जनरल स्मट्स बोले—"क़ानून को एक-दम रद्द कर देने से सरकार की प्रतिष्ठा पर भारी धक्का लगेगा—यह आप समझते ही हैं।—और अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए, गवर्न्मेंएट खून की नदी बहाने में भी नहीं हिचकती है। पर मैं वैसा करना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं चाहता। मैं आपको व्यक्तिगत रूप से विश्वास दिलाता हूँ—कि यदि भारतीय स्वेच्छा-पूर्वक परवाने ले लें—तो वह क़ानून फ़ौरन् रद्द होजायगा।"

गाँधीजी ने धीरता-पूर्वक कहा—"मुझे अपने काम से ग़र्ज़ है, अगर हमारी ज़रा-सी अड़चन से सरकार की प्रतिष्ठा की रक्षा होती है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं, हमें न आपसे दुश्मनी है, न आपकी प्रतिष्ठा घटानी अभीष्ट।......और अगर आप एक हाथ में पिस्तौल लेकर दूसरे हाथ में लिये हुए मस्विदे पर दस्तख़त कराना चाहें—तो यह असम्भव है।—जब 'ख़ूनी क़ानून' की पहली पिस्तौल से-ही क़ौम न डरी, तो इस धमकी की नई पिस्तौल से कैसे डरेगी?—अतएव यदि आप हमारे परवाने लेने पर ख़ूनी क़ानून रद्द कर देने का वचन देते हैं, तो हम उसके लिये तैयार हैं।......परन्तु एक प्रार्थना आप से है।"

जनरल स्मट्स ने इस पतले-दुबले हिन्दुस्तानी की निर्भीक बातों पर पुनः होट काटते हुए धीरे से पूछा—"वह क्या?"

"जब परवाना लेना हमारी अपनी इच्छा पर छोड़ दिया गया है, तो दसों उँगलियों की छाप देना-न-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना भी इच्छा पर छोड़ दिया जाय। क्योंकि मुसलमान भाइयों को ऐसा करने में धार्मिक कठिनाई है, और बहुत-से हिन्दू भाई भी इसे दासता का अत्यन्त अपमानजनक-चिह्न समझते हैं!"

धूर्त्त-शिरोमणि जनरल स्मट्स ने क्षण-भर सोचा, और फिर सहसा कहा—"मञ्जूर है; कल मैं संशोधित मसविदा आपके पत्र में भेज दूँगा।"

खड़े होकर गाँधीजी ने पूछा—"और सत्याग्रही क़ैदी कब छूटेंगे?"

"ओह!"--जरनल स्मट्स ने हँसकर—या हास्य का प्रदर्शन करते हुए कहा—"उन्हें रात-भर आराम करने दीजिये।--सुबह वे छोड़ दिये जायेंगे।"

"धन्यवाद!"—कहकर गाँधी चले गये।

दुरात्मा जनरल स्मट्स ने कमरे में इधर-उधर घूमते हुए मोंछों पर ताव देकर कहा—"शैतान!—मसीह का अवतार बना फिरता है!—हम से युद्ध करेगा!—भिखमङ्गा! कुत्ता!"—फिर ज़ोर-से दाँत पीसकर और मुट्ठी बाँधकर कहा—"याद रख बेवकूफ़, तेरा ख़ात्मा तेरे बेईमान भाई-ही करेंगे!!"

संसार में परमात्मा को सभी थोड़े पहचान लेते हैं!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

"तुम झूठे हो ! तुम पापी हो !"—भरी सभा में एक पठान ने खड़े होकर सक्रोध कहा।

गाँधीजी ने शान्त स्वर में पूछा—"कैसे भाई ?"

"तुमने पन्द्रह हज़ार पाउण्ड जनरल स्मट्स से लिये हैं, और उनके बदले में यह अपमानपूर्ण समझौता किया है। तुमने अपने पद का दुरुपयोग किया है !"—पठान ने गर्जकर कहा।

गाँधीजी हँसे, और बोले—"तुम बड़े सच्चे हो भाई, कहो, पन्द्रह हज़ार पाउण्ड मुझे नक़द मिले हैं—या चेक ?"

पठान ने खिसिया कर कहा—"हम नहीं जानते, हम तुम्हें नेता नहीं मानते, हम इस समझौते को स्वीकार न करेंगे।"

"क्यों ?"

हमारा इतने दिन का परिश्रम बेकार हो जायगा। —इतना कष्ट उठाया, व्यापार पर लात मारी, जेल गये, फिर वही परवाना, इससे लाभ क्या ?"

"देखो—जनरल स्मट्स ने खूनी-क़ानून रद्द कर देने का वचन दिया है।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाड़ में जाय जनरल स्मट्स, और साथ में तुम भी।—हम उस बेईमान की बात पर कैसे विश्वास करें ?"

"देखो भाई—सत्याग्रह का युद्ध सदा विश्वास पर ही चलता है।—अगर पचास बार विश्वास-घात करे, तो इक्यावनवीं बार पुनः विश्वास करना सत्याग्रही का धर्म है।"

"आप अपने ऐसे विश्वास को लेकर चाटिये; कोई सुबूत तो होना चाहिये—जिससे विश्वास करने को जी चाहे !

"बिना किसी सुबूत के-ही हमें फिर विश्वास करना होगा।"

पठान ने चिढ़कर कहा—"तो आप परवाना लेंगे?"

गाँधीजी दृढ़ता-पूर्वक बोले—"हाँ !"

"मगर आपकी वे लम्बी-चौड़ी तक़रीरें कहाँ गईं !"—पठान ने मलामत-भरे स्वर में कहा—"जिनमें आप परवाना लेने और दसों उँगलियों की छाप देने को गुलामी का भद्दे से भद्दा निशान बताया करते थे।—अब आप हमें उँगलियों की छाप देने की सलाह देते हैं !!—शर्म......"

"देखो—"गाँधीजी ने कहा"—जिन्हें उँगलियों की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाप देने में आपत्ति-हो वे भले-ही न दें, ऐसा जनरल स्मट्स से तय हुआ है।-तुम इस विषय में स्वतन्त्र हो!"

पठान ने दाँत पीसकर कहा-"मगर तुम जरूर दोगे ?

"जरूर !"

"अच्छा तो याद रखना, मेरा नाम मीर आलम है, तो मैं तुम्हें ज़िन्दा परवाना लेने न जाने दूँगा !'"

गाँधीजी ने ठठाकर कहा—"मेरा सौभाग्य होगा !"

परवाना लेना निश्चित् हुआ, और गाँधीजी ही सबसे पहले जाकर परवाना लेंगे।

(८)

दस फ़रवरी सन् १६०८ का प्रभात था। गाँधीजी तो दो अन्य भारतीय नेताओं के साथ सत्याग्रह-आश्रम से निकले, और एशियाटिक ऑफिस की तरफ़ चले।

सूरज अभी नहीं निकला था, सड़क पर आवा-जाही बहुत कम थी। गाँधीजी धीरे-धीरे बढ़ रहे थे।

सहसा किसी ने पुकारा—"ठहरो !"

पास के पेड़ की आड़ से पाँच-छः पठान, हाथों में लाठियां लिये, निकल आये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे-आगे मीर आलम था।

साथी भय से पीले पड़ गये, पर गाँधीजी एक बार आकाश की ओर देख, मरने को तैयार होगये।

मीर आलम ने आगे बढ़कर धीरे-से पूछा--"कहाँ जाते हो?"

गाँधीजी ने स-तेज स्वर में कहा--"परवाना लेने।"

"और उँगलियों की छाप देने!"

"हाँ उँगलियों की छाप देने।--अगर तुम चलो तो तुम्हें उँगलियों की छाप न देनी पड़ेगी।"

मीर आलम का सिर झुक गया, लाठी-वाला हाथ शिथिल पड़ गया।--कैसे इस तेज-पुञ्ज पर लात रक्खे?--कैसे इस निर्दोष आत्मबली पर हाथ उठावे?--हठात् उसका कठोर हृदय विद्रोह करने लगा।

गाँधीजी ने कहा--"बोलो--चलते हो?"

मीर आलम ने बड़ा भारी जोर लगाकर सिर उठाया, और उससे भी ज़्यादा ज़ोर लगाकर कहा--"उन पन्द्रह हज़ार पाउण्ड......"

गाँधीजी बोलने को हुए, कि सहसा पीछे से कड़कती हुई आवाज़ आई--"ले रिश्वत का इनाम!"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसी-क्षण ऐसा भान हुआ, मानों किसी ने हिमालय पर्वत लाकर सिर पर पटक दिया।—गाँधीजी 'हाय! कहकर ज़मीन पर गिर पड़े।

(९)

दे लाठी—दे लाठी,—अपने-जाने गाँधीजी को मुर्दा बनाकर मीर आलम और उनके साथी चले गये।

गाँधीजी का ओठ फट गया है, दो दाँत टूट गये हैं, पसली की हड्डी उखड़ गई है, बदन ज़ख़्मी होगया है, जोड़ दुख रहे हैं।

डाक्टरों के उपचार से वे होश में आये हैं।—

होश में आते-ही क्षीण स्वर में उन्होंने प्रश्न किया—"मीर आलम कहाँ हैं?"

किसी ने कहा—"वे पकड़े गये!"

गाँधीजी ने चौंककर कहा—"अरे!—पकड़े गये?"

"हाँ, उन पर मुक़द्दमा चलेगा।"

"ना! ना!—कभी नहीं"—गाँधीजी ने व्यग्रता-पूर्वक कहा—"वे छूटने चाहियें!"

"देखिये—यह सब पीछे भी होसकता है, आपके शरीर से खून बहुत गया है, आप आराम कीजिये।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ना ! ना !"—गाँधीजी बोले—"सबसे पहले मेरी तरफ़ से सरकारी वकील को तार दे दीजिये—कि वे छोड़ दिये जायँ !"

"क्यों छोड़ दिये जायँ ?"—एक और अंग्रेज़ सज्जन ने तर्क किया—"उसने अपराध किया-उसका दण्ड उसे अवश्य मिलना चाहिये !"

"ना !—अपने काम पर उसे खुद पश्चात्ताप होगा, यही उसके अपराध का समुचित दण्ड होगा !"

"और अगर वह पश्चात्ताप न करे ?—देखिये, वह बड़ा दुष्ट है !"

"न करे ?—" गाँधीजी ने कहा—"तो यह उसकी दुष्टता का कारण नहीं, मेरे हृदय की सत्यता, पवित्रता और सरलता की कमी का कारण होगा ।"

तर्क करने-वाले सज्जन चीख मारकर पीछे हट गये, और बोले—"ओफ् ! मेरे खुदा !—आज इसके दर्शन करके सफल हुआ !!"

तार लिखा गया, और उसी वक़्त रवाना कर दिया गया ।

एशियाटिक-विभाग का अंग्रेज़-अधिकारी भी वहीं मौजूद था, उसकी तरफ़ देखकर गाँधीजी ने कहा—"आप रजिष्टर ले आइये !"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसा रजिष्टर ?"

"मैं अपनी दसों उँगलियों की छाप देकर सब से पहले परवाना लेने की शपथ उठा चुका हूँ; मेरी वह शपथ पूरी होनी चाहिये !"

"मगर देखिये, आप कमज़ोर हैं !"

"कोई पर्वाह नहीं, धन्यवाद, मैं कर सकूँगा।"

"मगर ऐसी जल्दी क्या है ?"

"देखिये"—गाँधीजी ने कातर स्वर में कहा—"मेरी शपथ न तोड़िये !"

रजिस्टर आया, और बड़ी मुश्किल से बिछौने पर बैठकर, क्षत-विक्षत, दुर्बल-शरीर, गाँधीजी ने काँपते हाथों से दसों उँगलियों की छाप दी, और दस्तख़त किये।

—तब लम्बी-लम्बी साँसें लेते, बिछौने पर लेट गये।

जितने वहाँ उपस्थित थे, सबकी आँखें भर आईं, और एशियाटिक-विभाग का वह अफ़सर तो सचमुच रो पड़ा, और रूमाल-से आँखें पोंछता हुआ बोला--"ओफ़् !—मेरे खुदा !—जनरल स्मट्स किस स्वर्गीय आत्मा से कपट करने जारहे हैं, और किस पूजनीय शक्ति से लड़ाई कर रहे हैं !!"

गाँधीजी कई दिन बिछौने पर पड़े रहे, एक दिन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात को नींद में चौंककर पूछने लगे—"मीर आलम छूट गया ?"

शाम को-ही मीर आलम और उसके साथियों के छूटने की खबर आ चुकी थी। जवाब मिला—"छूट गया!"

"और उसके साथी भी ?"

"हाँ, साथी भी!"

तब रात-भर गाँधीजी गहरी और आराम-देह नींद में सोये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा खण्ड

(१)

दोपहर की कड़कड़ाती धूप पड़ रही थी। बॉक्सरेट की जेल में एक-एक लङ्गोटा बाँधे, कुछ भारतीय बैठे, पत्थर की गिट्टियाँ फोड़ रहे थे। ऊपर से सूर्य जलाता था, नीचे पत्थर के टुकड़े! पसीने की कुछ न पूछिये।—हरेक क़ैदी के चारों तरफ़ की गिट्टियाँ गीली होगई थीं। अभ्यास न होने के कारण बेचारों की उङ्गलियाँ कुचल गई थीं, फिर भी किसी न किसी तरह सब-लोग काम किये जाते थे—किये जाते थे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास-ही छाता-लगाये, एक गोरा घूम रहा था, उसके हाथ में एक मज़बूत चाबुक था।—ज़रा किसी को दम-लेते देखा—फटाफट चाबुक की मार!—उस वक्त की चीख़-चिल्लाहट सुनकर किसका हृदय था—जो न फट जाता!!

इसी समय एक छोटा अँगोछा-लपेटे, पतले और मैले कपड़े की बण्डी-पहने, हाथ में झाड़ू-लिये, एक व्यक्ति वहाँ आ खड़ा हुआ, और बोला—"शाबाश दोस्तो! लाज न जाने पाये!"

सबने पहचाना—गाँधीजी!

दो-एक गिट्टी फोड़ने-वाले उनकी तरफ़ आकृष्ट हुए। भला यह उस गोरे को कैसे सह्य होता?—वह झपटकर पास आया, और बोला—"क्यों बे गाँधी! तू यहाँ क्यों आया है?"

गाँधीजी ने सिर झुकाकर नम्रता-पूर्वक कहा—"साहब, मैं अपना काम कर चुका!"

"अपना काम कर चुका!"—गोरे ने डण्डा हिलाते हुए कहा—"क्या काम तुझे मिला था?"

गाँधीजी ने उसी स्वर में कहा—"साहब, मैं चार दिन से पाख़ाना साफ़ करने पर नियुक्त हूँ। इस समय निबट चुका हूँ!"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"थू! थू!—हट परे!" गोरे ने घृणा-से मुँह बनाकर हाथ का चाबुक गाँधीजी के पेट में चुभो दिया।

गिट्टी फोड़ने वालों के हाथ वहीं-के-वहीं रह गये, दो-चार उठ भी खड़े हुए, न मालूम क्या दुर्घटना हो जाती—कि गोरा सँभल गया, और बोला—"गाँधी, तुम्हें अपनी दुर्दशा पर दुःख नहीं होता?"

"बिल्कुल नहीं!"

"बिल्कुल नहीं!—हो हो! बिल्कुल नहीं!"—गोरे ने ठठाकर नाँचते हुए कहा—"क्यों झूठ बोलते हो?—वह चलती हुई प्रैक्टिस!—मज़ेदार खाना!—जोरू के मज़े!!—और यह भङ्गी बनना!—भला इसमें कुछ फ़र्क़ नहीं है? हो हो!-कहता है-बिल्कुल नहीं!!"

"साहब, यह पाखाना साफ़ करते हुए मुझे गौरव होता है!"

"गौरव होता है!" गोरे ने दोनों हाथ कमर पर रखकर नाटक के पात्रों की तरह अभिनय किया,-"ओ भाई संन्यासी! यह गौरव मेरी समझ में नहीं आया।—ज़रा मुझे समझा तो सही!"

"साहब, तुम्हारी आत्मा इतनी बलवान नहीं है, कि तुम उसे समझ सको।"

"हूँ!"--गोरे ने गर्दन हिलाकर कहा--"किसकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा इतनी बलवान है, ज़रा बता तो सही !"

"इनकी !"—कहकर गाँधीजी ने गिट्टी तोड़ते हुए सत्याग्रही-क़ैदियों की तरफ़ हाथ फैला दिया !

"हा ! हा !"--गोरे ने पत्थर के एक ढोंके पर हाथ की चाबुक ज़ोर-से फटकारते हुए कहा—"इन हिन्दुस्तानी-कुत्तों की ?......अच्छा तो, हिन्दुस्तानियों की आत्मा बलवान होती है, अंग्रेज़ों का दिमाग़ !—क्यों ?"

"नहीं साहब, बहुत-से अङ्गरेज़ों की भी आत्मा बलवान होती है।"

"शुक्र है !" गोरे ने कहा—"भला जनरल स्मट्स की आत्मा बलवान् है या नहीं।"

गिट्टी तोड़ने-वालों में से एक ने उत्तेजित होकर मराठी में कहा--"जनरल स्मट्स अव्वल-दर्जे का पाजी, झूठा, और विश्वास-घाती है !—उसने वचन तोड़ा है। --उसने गाँधीजी के साथ विश्वास-घात किया है, उसका कभी भला नहीं हो सकता !"

गोरा मराठी नहीं समझता था ! उसने एक बार इस उत्तेजित सत्याग्रही की तरफ़ देखकर गुर्रा दिया, और फिर गाँधीजी से कहा--"क्यों जी, जेल में आकर अब मज़े से गिट्टियाँ तोड़ते, और पाख़ाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साफ़ करते हो—इससे भला तुम्हें क्या अधिकार मिल गये ?"

"साहब, आप नहीं समझ सकते !"--आख़िर गाँधीजी ने इस व्यर्थ के वार्त्तालाप को समाप्त कर देने के अभिप्राय से मुँह फेर कहा।

"अरे बदमाश!—देख, अभी तुझे बतलाता हूँ, कैसे समझते हैं!"—कहकर गोरे ने ज़ोर-से चाबुक गाँधीजी के कमर पर मारा।

एक बड़ी तेज़ 'आह' निकलकर उस चिलचिलाती धूप में न जाने कहाँ विलीन होगई !

आप भारतीय हैं।—बस, इससे ज्यादा देखने की ताब आप में नहीं है, बस आइये, यहाँ से हट चलें; कहीं ऐसा न हो, आपका कलेजा फट जाय, या दौड़कर आप इस गोरे पर झपट पड़ें!—क्योंकि आप सत्याग्रही तो नहीं हैं न!

विश्वास-घाती जनरल स्मट्स ने जब खूनी क़ानून रद्द न किया, तो लिये हुए परवाने जला दिये गये।—फल-स्वरूप इन शिक्षित भारतीयों से चोर-डाकुओं की तरह काम लिया जारहा है, और भेड़-बकरियों की तरह—बल्कि निर्जीव पत्थरों की तरह—जेल में भरकर इन्हें पीटा जारहा है !!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

अन्त में भारतवर्ष अपने इन भाइयों की कष्ट-कथा सुन-सुनकर बिलबिलाने लगा। भारत के सर्व-मान्य नेता गोखले ने सन् १९११ में दक्षिण-अफ्रीका आना निश्चित् किया।

गोखले दक्षिण-अफ्रीका में आये, तो बड़ी धूम-धाम मची। स्टेशन सजाये गये, जुलूस निकाले गये, सभायें हुईं।

गोखले ने दक्षिण-अफ्रीका के मन्त्रि-मण्डल से भेंट की।

धूर्त्त जनरल स्मट्स को तो यह मञ्जूर न था—कि गोखले को साफ़ जवाब देकर भारत में अपने लिये विष के बीज बोये!—अतएव उसने खूनी क़ानून और तीन पौण्ड के कर को रद्द करने का वचन दे दिया।

भारतीयों ने मानों गङ्गा नहाई, और यह सोचकर सन्तोष का साँस लिया--कि चलो झगड़ा ख़तम हुआ।

परन्तु गोखले चले गये, तो भारतीयों को अँगूठा दिखा दिया गया।—और संसार में सब से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक सभ्यता का ढोंग रचने वाले अँग्रेज़ों के भाई जरनल स्मट्स ने पूछे जाने पर ऐसा वचन-तक देने से साफ़ इन्कार कर दिया।

अब भारतीय क्या करें?—इस सम्बन्ध में विचार-विनियय हो-ही रहा था, कि एक और महा-अमानुषिक, पशुता-पूर्ण और अनुचित वज्र उनके सिर पर गिरा।—अर्थात् यह क़ानून बना, कि दक्षिण-अफ्रीका में भारतीयों के जो विवाह उनकी अपनी पद्धति से हुए हैं, वे सब नाजायज़ हैं, और उनकी सन्तान कानूनम् उनकी सम्पत्ति की वारिस नहीं हैं।—मतलब यह कि भारतीयों की स्त्रियाँ—स्त्रियाँ न रहकर रखेली और खानगी बना दी गई!!

(३)

एक दिन एक मराठी-स्त्री सुर्ख़ चेहरा-बनाये गाँधीजी के पास आई, और कड़ककर बोली—"आप लोगों पर धिक्कार है!"

गाँधीजी ने नम्रता-पूर्वक कहा—"यह क्यों, बहन?"

"सरकार ने हम स्त्रियों का ऐसा अपमान किया है, और आप लोग चुपचाप बैठे, उसे सह रहे हो!"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह !—आप क़ानून की बात कहती हैं ? |"

"हाँ, जिसके अनुसार हम गृहिणी न रहकर रण्डी होगई हैं, और हमारी सन्तान हराम की पैदाइश समझी जायगी !"

"देखिये, हम उसके प्रतिकार का उपाय सोच रहे हैं।"

"बस, रहने दीजिये—आप लोग कुछ नहीं कर सकते।"

"क्यों ?"

"बरसों बीत गये, मगर आप अपने एक छोटे-से प्रयत्न में सफल नहीं हुए हैं।—जनरल स्मट्स एक-ही पाजी आदमी है !—आप उसकी बातों में आकर हर बार सब-कुछ करा-कराया स्वाहा कर बैठे हैं !"

"पर बहन, सत्याग्रह का युद्ध तो विश्वास पर-ही चलता है !"

"विश्वास किया जाता है, आदमियों का, महाशय, आप जिनका विश्वास कर रहे हैं, वे मनुष्य नहीं, पशु हैं !"

"शान्त हो बहन, हरेक मनुष्य में पशुता होती है और हरेक पशु में मनुष्यता, मगर दोनों-ही चीज़ों,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की हद होती है।—हम गोरों की पशुता को हद पर पहुँचा देना चाहते हैं!"

अब वे महिला कुछ नरम पड़ीं, और बोलीं—"अच्छा, इस नये क़ानून का क्या प्रतिकार आपने सोचा है?"

"वही सत्याग्रह!"

"कैसे?"

"बस, जो सत्याग्रह-युद्ध चल रहा है, उसमें इसे भी शामिल कर लिया जायगा।"

"नहीं, आप लोगों से हम-स्त्रियों को कुछ आशा नहीं है!"

गाँधीजी ने हँसकर कहा—"फिर कैसे विश्वास हो?"

"बस, आप हमें युद्ध की आज्ञा दीजिये!"

"अरे!!" ज़ोर-से 'अरे!' कहकर गाँधीजी स्तब्ध-से होगये, फिर बोले—"क्या स्त्रियाँ सत्याग्रह करना चाहती हैं?"

"क्यों?—स्त्रियाँ शरीर नहीं रखतीं?"

"क्यों नहीं?"—कहकर गाँधीजी फिर विचार में पड़ गये।

ओफ़्! कैसी भयङ्कर बात!—स्त्रियों का जेल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना !—कष्ट सहना !--गाली, लाञ्छन और अपमान बर्दाश्त करना !—और वे करें, तो करें—पुरुष कैसे बर्दाश्त करेंगे !—और फिर के स्त्रियाँ ऐसी वीर और हिम्मत-वर मिलेंगी—जो सत्याग्रह कर सकें ?—

—पूछा—"क्या आप अकेली-ही सत्याग्रह करेंगी ?"

"मैं अकेली भी तैयार हूँ; पर और भी कुछ स्त्रियाँ एसी है, जो मेरा साथ देने को तैयार हैं !--और आप शुरूआत तो होने दीजिये—देखिये, कितनी तैयार होजाती हैं !"

"बेशक !"—कहकर गाँधीजी क्षण-भर को चुप हुए, फिर बोले —"अच्छा, आप अपनी साथिनों को तैयार कीजिये, मैं परीक्षा लेकर कोई विचार स्थिर करूँगा !"

(४)

गाँधीजी स्त्रियों की दृढ़ता जाँच रहे हैं ।

"क्यों कैसे आई ?"

"जेल जाना चाहती हूँ !"

"क्यों ?"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारा जैसा अपमान हुआ है, उसने हमें जगत् में मुँह दिखाने-लायक़ नहीं रक्खा।"

"जेल जाने से क्या होगा?"

"हमारे कष्ट देखकर या तो भगवान् हमारे दुःख दूर करेंगे, या हम वहीं ख़त्म हो जायँगी।"

"तुम्हें मालूम है, जेल में कैसे-कैसे भयानक कष्ट मिलते हैं!"

"चाहे जैसे भयानक हों—इस समय हमारी आत्मा को जो भयानक कष्ट हो रहा है, उसके मुक़ाबले में सब कष्ट हेच हैं।"

"देखो—जेल में रूखी-सूखी बिना घी की, मिट्टी मिली हुई रोटी मिलती है—यह तुम स्मरण रखो।"

"जी हाँ, मैं इसकी पर्वाह नहीं करती।"

"और देखो—जेल में ऐसे सुन्दर वस्त्र भी पहनने-ओढ़ने को नहीं मिलते।"

"कोई चिन्ता नहीं!"

"सैकड़ों तरह की गालियाँ सुननी पड़ेंगी, अनेक प्रकार के अपमान सहने पड़ेंगे।"

"सब सह लूँगी!"

"देखो, सोच लो, वहाँ सब काम अपने हाथ से करना पड़ेगा; आवश्यकता पड़ने पर पाख़ाना-तक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साफ़ करना पड़ेगा।—पाख़ाना!—समझीं?"

अब उस बहन ने तमककर कहा—"गाँधीजी पाख़ाना साफ़ करने को आप मर्द एक बहुत-बड़ी बात समझते होंगे, हम स्त्रियाँ तो सदा-ही बच्चों का पाख़ाना साफ़ करने की अभ्यस्त हैं। फिर हम क्यों हिचकेंगी।"

गाँधीजी ने आत्मिक आनन्द का अनुभव किया, और हँसकर कहा—"देखो, तुम्हारी दृढ़ता की परीक्षा लेने के लिये-ही मैं ऐसे ठोक-पीटकर तुमसे प्रश्न कर रहा हूँ। मैं यह उचित समझता हूँ—कि सिर्फ़ एक सत्याग्रही युद्ध करने को तैयार हो, और दृढ़ रहे, बनिस्बत इसके कि हज़ारों-लाखों में से एक फ़ेल होजाय।"

"फ़ेल होजाना कैसा?"

"मार-पीट सहना, गालियाँ सुनना, जेल जाना, पत्थर की तरह सहन-शील बनना—यह पास होना है, और आवेश में आ जाना, अदालत में माफ़ी माँग लेना—यह फ़ेल होना है। मैं कदापि यह नहीं चाहता—कि इस समय तुम, या कोई, जोश में आकर उस संग्राम में कूद पड़े, और पीछे फ़ेल होकर जाति की हानि करे।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गाँधीजी, हमारी बात पत्थर की लकीर समझिये।—हम मर जायँगी, पर डिग नहीं सकतीं।—हमारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कोई भले-ही कर डाले—पर हम 'उफ्'-तक न करेंगी।—आप देखिये तो सही, हम अपने कर्त्तव्य और आपकी आज्ञा का पालन किस प्रकार करती हैं!"

तब वे महा-पुरुष प्रसन्न होकर एक बार धीरे-से हँस दिये, और दोनों हाथ उठाकर बोले—"जाओ, देश की लाज रखने-वाली देवियो, ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे!"

पर विश्वास-घाती जनरल स्मट्स की सरकार अभी इतनी बे-हया नहीं बनना चाहती थी। ग्यारह स्त्रियों की जो टुकड़ी सत्याग्रह-युद्ध में शामिल हुई, उसे गिरफ़्तार न किया गया। उन्होंने बिना परवाने के सरहद भी लाँघी, फेरी भी लगाई, पर किसी सिपाही ने उन्हें गिरफ़्तार न किया!

तब यह स्त्रियों की टुकड़ी गाँधीजी के आदेशानुसार—न्यू कॅासिल की तरफ़ चली।

कोयलों की खानों के पास पहुँचते-पहुँचते, सैकड़ों भारतीय-मज़दूर उनके इर्द-गिर्द जमा होगये।

इस टुकड़ी में से एक स्त्री ने कहना शुरू किया—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाइयो, हम यहाँ किस लिये आई हैं ?—यह सुनिये।—यूनियन-सरकार ने हम भारतीयों पर जो अन्याय-पूर्ण प्रतिबन्ध लगा रक्खे हैं, उनका विरोध करना प्रत्येक भारतीय का धर्म है।—आख़िर हमने क्या पाप किया है, कि हमसे तीन पौंड प्रति-वष 'कर' लिया जाता है।—तुम लोग गोरों से ज्यादा परिश्रम करते हो, उनसे बहुत-कम उपार्जन कर पाते हो, गहरी खानों में काम करते-करते तुम अकाल-मृत्यु को प्राप्त होते हो।—और तिसपर, तुम्हारी अपेक्षा पशुओं के प्रति गोरों का व्यवहार सुन्दर होता है।—और फिर तुम्हारे ऊपर तीन पौंड सालाना का टैक्स लाद रक्खा है।—इस टैक्स की अदायगी के लिये, तुम्हारी स्त्रियाँ, बच्चे भूखे-तक मर जाते हैं, बहुत-सी असहाय बहनें अपना सतीत्व-रत्न बेचकर यह तीन पौंड का कर अदा करती हैं।—और इस तरह तुम मनुष्य होते हुए पशुओं से भी अधिक निन्द्य जीवन बिता रहे हो!

"गाँधीजी का नाम तुमने सुना होगा। उन्होंने इस अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाई है। हम उन्हीं की भेजी हुई तुम्हारे पास आई हैं।—उनकी आज्ञा है—कि तुम सब-लोग एक-दम काम छोड़ दो—इस-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये मजबूर होकर सरकार को तुम्हारे कष्ट दूर करने होंगे। एकदम काम छोड़ने पर तुम्हें खाने-पीने का कष्ट होगा, शायद जेल भी जाना पड़े, और भी तरह तरह के दुःख मिल सकते हैं।—इन सब बातों पर विचार करके कहो—क्या तुम हड़ताल करोगे?"

ग़रीब-मज़दूरों ने कोलाहल मचाते हुए कहा—"ज़रूर करेंगे; अभी हड़ताल करेंगे!"

"सब कष्टों को सह लोगे?"

"हाँ, सह लेंगे, अभी कौन-सा सुख हमें मिल रहा है!"

"अच्छा तो—इसी-दम गाँधीजी के पास चले चलो!"

—इसी समय हाथों में मज़बूत चाबुक लिये, आठ-दस गोरे—लाल चेहरा-बनाये, वहाँ आ खड़े हुए।—और एक ने डपटकर एक स्त्री से पूछा—"तुम यहाँ क्यों आई हो?"

उसी स्त्री ने नम्रता-पूर्वक कहा—"हम इन मज़दूरों से हड़ताल कर देने का अनुरोध करने आई हैं!"

"क्यों?—तुम्हारा क्या मतलब?"

"हम तीन पौंड के अन्याय-पूर्ण टैक्स को रद्द

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराना चाहती हैं।"

"अरे जाओ, जाओ, यहाँ से!—तुम्हारी शामत ने धक्का तो नहीं दिया है!—या बुलाऊँ पुलीस को।"

"आपकी जो इच्छा हो, सो करें!"

"बदमाश औरतें!—हमारा व्यापार नष्ट कराना चाहती हैं।—जाओ, ये लोग हड़ताल न करेंगे!—जाओ! चली जाओ!"

इसी समय मज़दूर चिल्ला उठे—"हम हड़ताल करेंगे! हम हड़ताल करेंगे!!"

गोरों ने गुर्राकर मज़दूरों की तरफ़ देखा, और कहा—"क्या? हड़ताल करोगे?"

"हाँ, हड़ताल करेंगे!"

"जानते हो, इन आवारः औरतों के बहकावे में पड़कर तुम्हें क्या-क्या कष्ट भोगने पड़ेंगे?'

"हम सब जानते हैं; हड़ताल करेंगे!"

"याद है—गिरमिट में क्या लिखा है?"

"हम हड़ताल करेंगे!—हमें पर्वाह नहीं!"

"क्या जेल की हवा खाने का विचार है?"

"कोई चिन्ता नहीं!—हड़ताल करेंगे!"

"अरे बदमाशो, तुम हमारा मुक़ाबला करोगे, (एक अन्य गोरे की तरफ़ देखकर) जाओ, एडवर्ड,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस-सुपरिंटेण्डेण्ट को फ़ोन करो, और मदद मँगाओ, अभी इनकी अक़्ल दुरुस्त हुई जाती है !"

—एडवर्ड तो उधर गया, और इधर बाक़ी गोरों ने उन ग़रीब मजदूरों पर हाथ के चाबुकों का वार करना आरम्भ किया।

बच्चे रोते थे, स्त्रियाँ चिल्लाती थीं, मर्द 'हाय! हाय!' करते थे, और सत्याग्रही महिलायें बराबर चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थीं—"ख़बरदार !—सब मार सिर झुका कर सहलो !—और चुपचाप खड़े रहो !—मुक़ाबला करने की बात मन में भी न लाओ ।"

मज़दूरों ने मुक़ाबला तो न किया, मगर खड़े भी न रह सके; गिरते-पड़ते शहर की तरफ़ भाग निकले।

जब पुलीस आई—तो केवल वे ग्यारह सत्याग्रही महिलायें, अटल वहाँ खड़ी थीं !

ग्यारहों गिरफ्तार करली गई !

(५)

दुःख, अपमान, कष्ट और परतन्त्रता का जो बाँध विवशता ने बाँध रक्खा था, गाँधीजी के आन्दोलन ने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे तोड़ दिया, और स्वतन्त्रता के लिये व्याकुल भारतीयों ने बिजली की तरह हड़ताल करनी शुरू कर दी, देखते-देखते पाँच-छः हज़ार मज़दूरों ने हड़ताल कर दी, अनेक मिलों के दफ्तरों में ताले लटक गये, अस्पतालों में गोरे रोगी भिनकने लगे, प्रमादी, घमण्डी, साहब-लोगों के मुँह में से मक्खियाँ आने-जाने लगीं, पाखाने सड़ने लगे, और—इस तरह 'तुच्छ' भारतीयों की संगठित हड़ताल ने एक-बारगी गोरों में त्राहि-त्राहि मचा दी!!

खानों के मालिकों ने गाँधीजी को निमन्त्रण दिया। —बहुत जलकर, बहुत कुढ़कर, और बहुत व्यथित होकर!—भला एक काले हिन्दुस्तानी को गौराङ्ग-प्रभु निमन्त्रण दें!—इससे अधिक डूब मरने की बात उनके लिये क्या हो सकती है!!—अस्तु—

गाँधीजी गये। एक बड़े कमरे में मोटे, लम्बे, नाटे, दुर्बल अनेक अङ्गरेज़-खान-मालिक बैठे हुए थे। किसी के हाथ में सिग्रेट था, कोई हाथ की बेंत हिला रहा था, कोई दोनों कोहनियाँ मेज़ पर टेके, दसों उँगलियाँ मिलाये बैठा था, कोई हथेलियाँ मल रहा था, कोई सीटी बजा रहा था।—

और सबके चेहरे क्रोध, क्षोभ, अपमान और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लज्जा के कारण रक्त-वर्ण हो रहे थे! ओफ्! यह गाँधी कच्चा चबा डालने-योग्य है, जिसने हमारे लाखों के व्यवसाय पर एक-बारगी पानी फेर दिया है !!

पर, जब उस छोटी-सी, संक्षिप्त भव्य-मूर्त्ति ने उस कमरे में प्रवेश किया, और निश्शंक दृष्टि से इधर-उधर देखते हुए एक हाथ उठाकर सबको सलाम किया, तो एक बार सब-लोग आश्चर्य-से भौचक् हो, तन-बदन की सुध भूल गये। यही गाँधी है?—यही विशाल अङ्गरेज़-जाति के विरुद्ध खड़ा हुआ है?—इसी पर ईमान लाकर हज़ारों आदमी जेल जाने को प्रस्तुत हो गये?—इसी दुर्बल-शरीर सीधे-साधे आदमी की बात मानकर गोखले-जैसा महान् नेता हज़ारों-मील से भागा आया?—इत्यादि प्रश्न उन अधिकार मत्त, घमण्डी गोरों के विकार-ग्रस्त मस्तिष्क में उदय हुए !!

गाँधीजी जाकर कुर्सी पर बैठे, और बात-चीत शुरू हुई।—

"आपने यह हड़ताल क्यों कराई?"

"मैंने हड़ताल नहीं कराई। कहें, ग़रीब मज़दूरों के प्रति आपके और आपकी सरकार के व्यवहार ने कराई।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमसे तो हमारे मज़दूरों को कोई शिकायत नहीं थीं।—हाँ, सरकार की बात सरकार जानें, सरकार के अपराध का ख़मियाज़ा हमें क्यों उठाना पड़े?"

"बात यह है, कि उसमें बहुत अंशों में आपका-ही उत्तरदायित्व है। सरकार हरेक क़ानून में यह बहाना करती है,-और वह सच्चा बहाना है-कि दक्षिण-अफ्रीका के गोरे यह नहीं चाहते, वह नहीं चाहते।"

"इसका अर्थ?"

"यानी, अगर आप सब लोग मिलकर सरकार पर ज़ोर डालें—तो वह अवश्य भारतीय-मज़दूरों के दुःखों को दूर करदे।"

"मगर यह समझ में नहीं आता—कि मजदूरों पर ऐसा कौन-सा दुःख का पहाड़ आपड़ा है, जिसके नीचे दबकर वे बिलबिला रहे हैं!"

"अब यह तो जिस पर पड़ती है, वही जानता है!"

"आख़िर?"

"जैसे यह तीन पौण्ड-वाला कर-ही—"

"ओह! यह तो व्यर्थ का हठ है, और आपकी शैतानी है!—ये लोग यहाँ इतना अधिक कमाते हैं, कि साल में तीन पौंड कर उन्हें क़तई नहीं अखरता। अगर अखरता—तो क्या इतने दिनों से ये लोग कोई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्दोलन न करते!"

"अब आपकी ज़बान!—आप कुछ भी कहें।—मगर भारतीयों की स्थिति से जितना मैं परिचित हूँ—उतने आप नहीं!—उस तीन पौंड के कर की अदायगी के लिये, कितनी स्त्रियों को व्यभिचार करना पड़ता है, कितने बच्चे होते-ही मार दिये जाते हैं, और किस प्रकार पेट काटकर तीन पौंड जमा करना पड़ता है—यह आप कैसे समझ सकते हैं?"

"अच्छा बस, बहुत हुआ, अब मतलब की बात पर आइये!"

"कहिये।"

"देखिये—इस ढोंग को तो हम भी खूब समझते हैं।—अब यह बताइये—आपका मतलब क्या है?"

"मतलब?—कुछ नहीं, सिर्फ यही कि भारतीयों पर होने-वाला अमानुषिक अत्याचार......"

"अजी वह तो होचुका!—उस ढोंग को हम समझते हैं—"

"ढोंग?—कैसा ढोंग?"

"अब साफ़-ही कहलाइयेगा?"

"हाँ, कहिये, साफ़ कहने में किसका डर?"

"अच्छा यह बताइये, कितना रुपया लेकर आप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ैसला करने के तैयार हैं?"

"फ़ैसला?—रुपया??"

"हाँजी, रुपया!—हम क्या समझते नहीं?—मगर उस्ताद, मानते हैं तुम्हें; रुपया पैदा करने का यह रास्ता तुम्हीं ने ईजाद किया है!"

गाँधीजी घबड़ाकर कुर्सी से उठ खड़े हुए, और बोले—"आप क्या अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं?—होश में आकर बातें कीजिये!—क्या आपने मुझे रुपया लेकर क़ौम के बेच देने-वाला समझ रक्खा है?"

"अजी, आप बैठिये तो सही, आप बड़े क़ौम-परस्त हैं?—देखिये—यह बात किसी के कानों-कान मालूम न हो पायगी!—बोलिये, एक हज़ार पौंड......!"—कहते-कहते चेक-बुक और क़लम निकाल ली गई।

गाँधीजी ने पगड़ी सम्हाली, और बोले—"साहब, मेरे कान इन बातों के सुनने के पहले फूट जायँ—तो अच्छा!—मैं चला!"

अब गोरों की अक़्ल का पर्दा उठा, और नम्रता-पूर्वक गाँधीजी से बैठने को कहा गया।

बैठकर गाँधीजी बोले—"देखिये, न तो मैं क़ौम को बेचता हूँ, और न मुझे आपसे समझौता करने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अधिकार हैं। मेरी तो आप से यही प्रार्थना है, कि आप अपने आश्रित मज़दूरों पर दया करके सरकार से उनके दुःख दूर करने का आग्रह करें।"

लज्जित स्वर में उधर से झुँझलाकर पूछा गया— "अच्छा तो, आप मज़दूरों को हड़ताल ख़त्म करने की सलाह नहीं देंगे?"

"दे सकता हूँ—अगर आप मुझे इस बात का निश्चय दिलायें—कि कब उनके दुःख दूर होसकेंगे?"

"मगर हम तो अफ़सर नहीं हैं; हम ऐसा निश्चय कैसे दिला सकते हैं?"

"अगर आपके हृदय में मज़दूरों के प्रति सद्भावना, और सहानुभूति पैदा होजाय, तो सब काम ज़रा-सी देर में होजाय।—मैं वही सद्भावना और सहानुभूति आप में देखना चाहता हूँ।"

अब उधर से गुर्राकर कहा गया—"अच्छा, अब यह दार्शनिकता छौंकने से बाज़ आइये, और सीधी तरह बताइये, आप इस हड़ताल के नेतृत्व से दस्तबरदार होते हैं या नहीं?"

"मैंने पहले-ही कहा—मैं नेता नहीं हूँ, मैं तो एक तुच्छ सेवक की हैसियत से काम कर रहा हूँ!"

"ख़ैर, ये बातें तो होचुकीं!—अब सीधे-सीधे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दों में अर्ज़ यह है—कि अगर आपकी और आपकी क़ौम की शामत ने धक्का नहीं दिया है, तो चौबीस घण्टे के अन्दर इस हड़ताल को समाप्त करा दीजिये।"

"क्या बताऊँ—मुझे जो कहना था, कह चुका।"

"यह कहना-सुनना सब धरा रह जायगा। याद रखिये, यह सारी हेकड़ी, जेल की सैर करके हवा होजायगी। यह अङ्गरेज़ों का मामला है, इसमें आपकी धौंस नहीं चल सकती।—वाह जी वाह!—शासे रहे!—आज कहते हैं, 'कर' रद्द करो, कल कहेंगे तनख्वाह बढ़ाओ, परसों कहेंगे, हमारे जूते साफ़ करो!—वरना हम हड़ताल करते हैं!!"

"मगर देखिये, यह तो धौंस नहीं, आग्रह और विनय है।"

"विनय इस तरह होती है? विनय करनी है, तो नौकरी पर आकर विनय करें।"

"मुँह की विनय और आग्रह का आप पर असर हुआ? अब वे बेचारे अपने दुःखों के प्रतिकार के लिये अगर वैध उपायों का अवलम्बन करते हैं—तो आप क्यों चिढ़ते हैं?"

"अच्छा बस, हो चुका!—आप यह समझ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखिये—कि आप अपने ऊपर बड़ी भारी ज़िम्मेवरी ले रहे हैं !"

"अपनी ज़िम्मेवरी को आपसे ज्यादा मैं समझता हूँ।"

"ख़ैर, आपकी इच्छा !—मगर यह समझ रखिये—कि खून की नदियाँ बह जायँगी, पर अङ्गरेज़ किसी की धौंस में आकर बाल-बराबर न दबेंगे।"

"धौंस तो आप को दी नहीं गई; रही दबने की बात—सो सत्याग्रह की शक्ति में मुझे तो पूर्ण विश्वास है, समय आने पर आप भी देखेंगे-ही !"

"अच्छी बात हैं, अब हम भी देखकर-ही मानेंगे। या तो देखेंगे—या दिखा देंगे !"

"ख़ैर, जो आपकी इच्छा हो !—मुझे विदा दीजिये !"

—कहकर गाँधीजी खड़े होगये।

एक उच्छृङ्खल युवक खान के मालिक ने कड़ककर कहा—"अच्छा, पहिले आपका तो सफ़ाया करूँ—कीजिये, परमेश्वर को याद !"

सब ने देखा—उसने पिस्तौल का निशाना गाँधीजी की तरफ़ साध रक्खा है !

गाँधीजी ने अविचलित स्वर में कहा—"क्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार डालियेगा ?"

"क्यों ?—क्या तुम्हें इसमें सन्देह है ?"

"मुझे तो पूरा सन्देह है।—जो मनुष्य ऐसे समय भी मुझसे परमात्मा को याद करने की प्रेरणा कर रहा है, मेरी समझ में वह कभी घातक नहीं हो सकता ! मुझे विश्वास नहीं होता—कि आप मुझे मारेंगे !"

ओफ् ! कैसी ऊँची बात ! सब-के-सब एक बार सन्न होगये।—तब एक गोरे ने उस युवक से कहा—"वेलिङ्गटन, इसकी आवश्यकता नहीं है, पिस्तौल जेब में रखलो !"

युवक ने पिस्तौल जेब में रख लिया, और हँसता हुआ बोला—"ओह !—मैं तो मज़ाक करता था।—गाँधी, तुम बुरा तो नहीं मान गये ?"

"बिल्कुल नहीं।"

उस नवयुवक ने गाँधीजी का हाथ पकड़कर कहा—"गाँधी, ईश्वर तुम्हें विजय दिलाएगा।"

गाँधीजी के हृदय से 'कार्यं वा साधयेयं' की मूक ध्वनि निकल रही थी !!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसंहार

सात हज़ार मज़दूर-समुदाय के साथ गाँधीजी ट्रान्सवाल की तरफ़ जारहे हैं। तीन बार वे पकड़े गये हैं, और तीनों बार छोड़ दिये गये हैं।—और सत्याग्रह-संग्राम के लिये जाते हुए इन हज़ारों योद्धाओं में तीनों बार नया जोश पैदा हुआ है!

पर सरकार यह कैसे मञ्जूर करे? अफ्रीका की आवाज़ देश-देशान्तरों में पहुँच रही है।—सब तरफ़ घोर संघर्षण शुरू होगया है। धड़ाधड़ मिलें बन्द होरही हैं।—और दमन का चक्र चल रहा है!!

आख़िर एक दिन वह सात हज़ार मज़दूरों का समुदाय गिरफ़्तार होजाता है!

पर इससे कहीं लहर दब सकती थी? रोज़ मिलें बन्द होने लगीं—चारों ओर अशान्ति का राज्य होगया।—और एक बार तो ऐसा मालूम हुआ—कि निस्सहाय भारतीय-मज़दूर अपनी एकता, सङ्गठन-शक्ति, और सहन-शीलता के बल पर गोरों को पागल बना देंगे। भारत में आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा। धड़ाधड़ भारतीय आने लगे। योरोप में भी तार पहुँचे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इङ्गलैण्ड के पत्रों के कॉलम भरे गये।—और धूर्त्त-शिरोमणि, पाजी, झूठे, जनरल स्मट्स की आँखों में क्रोध, क्षोभ, अपमान और लाचारी के आँसू भर आये, और उसकी कूटनीतिज्ञता को भी दुम दबाकर भागना पड़ा।—और बात तो बहुत लम्बी हैं, मगर संक्षेप में—

—३० जून १९१४ ई० को भारतीयों की युद्ध-विषयक लगभग सभी बातें मानली गईं, तीन पौंड का कर रद्द हुआ, विवाह जायज़ माने गये, और महा-पुरुष गाँधी के अभूतपूर्व युद्ध

सत्याग्रह

में शानदार विजय मिली। और आठ वर्ष-तक दक्षिण-अफ्रीका में इस युद्ध का छोटा-सा खेल खेलकर कृष्ण या खीष्ट का वह अवतार आज भारत-भूमि के सत्याग्रह-संग्राम में जुटा हुआ है!

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विनोद-रत्न-माला'

के

स्थायी-ग्राहक बनने के नियम

१—स्थायी-ग्राहक बनने की फीस ॥) है।

२—पुस्तकें प्रकाशित होने के एक सप्ताह-पूर्व सूचना-पत्र भेजा जाता है, और एक सप्ताह बाद २५ फीसदी कमीशन काटकर पुस्तक वी० पी० द्वारा भेज दी जाती है। जो ग्राहक पुस्तकें मँगाना न चाहें, उनका पत्र पाने पर, पुस्तके नहीं भेजी जातीं।

३—हमारी-प्रकाशित और प्रचारित अन्य पुस्तकों पर भी स्थायी-ग्राहकों को २५ फीसदी कमीशन मिलता है।

४—सूचना न देने पर भी वी० पी० लौटा देने-वाले सज्जनों की फीस ज़ब्त कर ली जाती है, और उनका नाम स्थायी-ग्राहक-सूची से काट दिया जाता है।

५—जो सज्जन ग्राहक-श्रेणी से नाम कटाना चाहें, उनकी प्रवेश-फीस स-धन्यवाद वापिस कर दी जाती है।

६—पुस्तकें मँगाने के अतिरिक्त स्थायी-ग्राहक कार्यालय दिल्ली से सम्बन्ध रखने-वाली कोई सेवा या कोई वस्तु लेना चाहेंगे, तो कार्यालय सदैव उनके लिये तैयार रहेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद-रत्न-माला

की प्रसिद्ध पुस्तकें

१-ग़दर

[ऋषभचरण – लिखित]

(दिल्ली-सरकार-द्वारा ज़ब्त, अप्राप्य !)

२-बुरक़ेवाली

(ऋषभचरण-लिखित)

हिन्दी-कहानी-साहित्य में बिल्कुल नये ढङ्ग की पाँच कहानियों का संग्रह है;—'बुरक़ेवाली', '···चला हंस की चाल', 'मोम का पत्थर', 'कड़वा प्यार', 'दिलारा'। लेखक की भाषा और रचना-शैली की तारीफ़ अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने की है। प्रसिद्ध साप्ताहिक-पत्र 'भारत' में, उसके विद्वान् सम्पादक-महोदय पण्डित नन्ददुलारेजी वाजपेयी की सम्मति पढ़िये—"ऋषभचरणजी देहली-केन्द्र के हिन्दी-कथा-साहित्य के उदीयमान् लेखक हैं। देहली-केन्द्र की उर्दू मिली हुई, रँगीली, ज़ोरदार भाषा की विशेषता पं० पद्मसिंह शर्मा से लेकर चतुरसेन-जी, जैनेन्द्र और ऋषभचरणजी, में एक-सी है। इस भाषा की हम तारीफ़-ही करेंगे। कहानियों में तो ऐसी भाषा और भी अच्छी लगती है; ख़ासकर प्यार की, या वीरता की कहानियों में। ऋषभचरणजी की कहानियाँ प्यार की कहानियाँ हैं।" साठ पाउण्ड डाइङ्ग-पेपर के पौने दोसौ पृष्ठ हैं, चार मनोहर चित्र हैं, छपाई के सम्बन्ध में हिन्दी के प्रसिद्ध प्रकाशक पं० नाथूराम जी 'प्रेमी' लिखते हैं—'बुरक़ेवाली" की छपाई ख़ूब ठाठसे हुई है ! दाम केवल १।) सजिल्द १॥)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३-दिल्ली का व्यभिचार

(ऋषभचरण—लिखित)

बड़े-बड़े नगरों में दिन-दहाड़े भयानक दुराचार के खुले खेल खेले जाते हैं। बड़े-बड़े दिग्गज, विद्वान् पुरुष भी अपने उच्च-पद का दुरुपयोग कर, भोली-भाली जनता को अनाचार की तरफ़ ले जाते हैं, और बुरे-से-बुरे उपाय-द्वारा भी रुपया लूटने में नहीं हिचकते। आधुनिक गर्हित पाश्चात्य-शिक्षा-प्रणाली के फल-स्वरूप आज हमारे नवयुवक पतन के गढ़े में गिर गये हैं, और अपना भविष्य भूल, आँख मींचकर भयानक पाप करते नहीं हिचकिचाते। हमारी माँ-बहनें अशिक्षा और वासना में अन्धी होकर असहनीय, घृणित पापाचार में रत होने का दुस्साहस करतीं हैं। लेखक ने नगरों के कुछ ऐसे-ही दृश्य इस पुस्तक में रक्खे हैं। पुस्तक साहित्य की दृष्टि से कुछ ऊँची न होने पर भी साधारण पाठकों के लिये अत्यन्त शिक्षाप्रद, हितकर और उपादेय हैं। 'पीर साहब', 'फ़िल्म-एक्ट्रेस', 'स्काउट—मास्टर', 'हीजड़े की स्त्री'—इत्यादि कुछ कहानियों के नाम हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध मुसल्मान-लेखक श्री० ज़हूरबख्शजी ने लिखा —"....निस्सन्देह बहुत-अच्छी पुस्तक है। लेखन-शैली कला-और रोचक है। सामाजिक बुराइयों का नाश करने के लिये ऐसी-ही पुस्तकों की आवश्यकता है। जो ऐसी पुस्तकों का विरोध करते हैं, वे भूल में हैं।" चार कला-पूर्ण चित्र, और डेढ़-सौ पृष्ठ की पुस्तक का दाम १) रु० सजिल्द १।) रु०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-बिखरे-मोती

(ऋषभचरण-लिखित)

इस पुस्तक में लेखक की अठारह वर्ष की आयु-तक की लिखी गई सर्वोत्तम बारह कहानियों का संग्रह है। छोटे-से-छोटे कथानक और भाव में पाठक के अन्तस्तल में चुटकी लेना-ही कहानी की सफलता है। लेखक की इन सभी गल्पों में यह गुण पूर्ण-रूप से विराजमान है। कोई भी कहानी ऐसी नहीं है, जिसे समाप्त करने में दस मिनट से ज़्यादा समय लगे प्रत्येक कहानी आदि से अन्त-तक ऐसी मनोरंजक और प्रवाह-पूर्ण है, कि बिना समाप्त-किये नज़र उठाने की इच्छा नहीं होती। शब्द-जाल, सरलता, व्यङ्ग और विश्व-अनुभव की स्पष्ट छाप आप इन कहानियों में पायेंगे। 'राख की पोटली', 'मुन्शीजी', 'ताँगेवाला'-आदि कहानियों ने साहित्य-प्रेमियों से अच्छी दाद पाई है। कई कहानियाँ हिन्दी की सर्वोत्कृष्ट, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। 'ताँगेवाला', 'दानवीर भिखारी', 'सूखे आँसू'-इत्यादि कई कहानियाँ तो उर्दू-आदि भारत की अन्य भाषाओं में अनुवादित होकर भी छप चुकी हैं—इसी से इनकी सफलता और उत्तमता का अनुमान किया जा सकता है। पुस्तक डेढ़-सौ से अधिक पृष्ठों पर सुन्दरता पूर्वक छापी गई है। ऊपर तिरङ्गा सुन्दर कवर है, और दाम केवल बारह आने सजिल्द १) रु०।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५-वेश्या-पुत्र

(ऋषभचरण-लिखित)

ऋषभचरण-लिखित एक मौलिक और प्रभावोत्पादक उपन्यास है। चरित्र-चित्रण, भाव-विश्लेषण और घटना-वैचित्र्य,—उपन्यास के तीनों प्रधान गुणों को सफलता-पूर्वक निबाहा गया है। पात्रों की भाषा सामयिक, ज़ोरदार और उपयुक्त है। हिन्दू-मुस्लिम दंगे में मारे गये एक युवक की पत्नी के पुरुषों की लम्पटता और चरित्र-हीनता से ऊबकर वेश्या हो जाने, और वेश्या होते हुये भी युवकों के चरित्र-निर्माण में प्रयत्नशील रहने का आश्चर्य-जनक वृत्तान्त पढ़कर आप लेखक की आदर्श कल्पना की प्रशंसा किये बिना न रहेंगे। आदर्शवाद (Idealism) और यथार्थवाद (Realism)—दोनों की रक्षा करते हुए जिस .खूबी के साथ एक वेश्या के आन्तरिक-भावों का दिग्दर्शन और उसका सुधार कराया गया है, वह सराहनीय है। इसी वेश्या के पुत्र के घटना-चक्र में पड़कर अपनी सहोदरा पर मोहित होने, और क्रमशः अपनी पूर्व-प्रेमिका से उदासीन होने में एक युवक-हृदय भावों का जीवित-दिग्दशन अत्यन्त मर्म-स्पर्शी हो उठता है। आज-ही मँगाइये। साठ पाउण्ड ड्रॉइङ्ग-पेपर पर स्वच्छ छपाई।

सुन्दर, भाव-पूर्ण तिरङ्गा कवर, और दाम सिर्फ २।।) रु०

सजिल्द २।।।) रुपया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६-मास्टर साहब

(ऋषभचरण-लिखित)

अपने व्यक्तित्व पर कलङ्क लगता देख, युवक मास्टर साहब अत्यन्त शान्ति और निस्तब्धता के साथ, अनन्त वैभव को लात मारकर अपनी जीवन-नौका को भाग्य की पतवार के सहारे विस्तृत संसार-सागर में डाल देते हैं। वर्षों सुख और समृद्धि में जीवन बिताने पर भी वे जिस गम्भीरता के साथ अपने विपत्ति के दिन काटते हैं, उसे पढ़कर सहानुभूति से हृदय भर जाता है। कट्टर समाज-सुधारक सम्पतराय संयोग-वश मास्टर साहब से मिलते हैं, और उन्हें अपनी पत्नी का शिक्षक नियुक्त कर देते हैं। सम्पतराय की स्व-जातीय दासी बसन्ती के हृदय में मास्टर साहब के प्रति एक-दम घोर सहानुभूति और स्नेह का प्रादुर्भाव होता है। परन्तु वह, गम्भीर मास्टर साहब के मनोभाव न समझकर, कठपुतली की तरह स्त्री-हृदय की रङ्गीन तरङ्गों में चक्कर लगाती है। एकाएक उपेक्षा की इतनी गहरी छाप उसके हृदय पर पड़ती है कि वह मास्टर साहब के अपमान का कारण बनजाती है। फिर मास्टर साहब की विशाल-हृदयता उसकी समस्त दुर्भावनाओं को नष्ट कर उसे मास्टर साहब का कलङ्क धोने पर बाध्य करती है। अन्त में भ्रम और सन्देह का नाश होकर सब का सुखद-मिलन होता है। 'मास्टर साहब' लेखक की अमर कृति है!

पाँच रङ्गीन चित्र! ढाई सौ पृष्ठ!! मूल्य २) रु०सजिल्द २।) रु०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७-फाँसी

(जैनेन्द्रकुमार-लिखित)

—:o:o:—

'फाँसी' में तीन राजनैतिक कहानियाँ संगृहीत हैं। १ फाँसी, २. ग़दर के बाद, ३. स्पर्धा। पहली कहानी 'फाँसी' में अंग्रेज़ी-सरकार का दिल हिला देने-वाले एक भयङ्कर हिन्दुस्तानी-डाकू का चरित्र है, जो अंग्रेज़ों की नज़रों में डाकू और हिन्दुस्तानियों की नज़रों में दीन-दुखियों का सहायक, गुलामी का विरोधी, विदेशी-सरकार का विद्रोही—कट्टर देश-भक्त था। इस असाधारण पुरुष के धैर्य्य-पूर्ण, उच्च व्यक्तित्व का हृदयस्पर्शी चित्रण, एक अंग्रेज़-अफ़सर के वीर चरित्र का निष्पक्ष दिग्दर्शन, टुकड़-खोर भारतीय अफ़सर के पतित चरित्र का घृणित वर्णन और एक अबोध युवती के मुग्ध प्रेम की गाथा बड़ी-ही मर्म-वेधिनी हो उठी है। दूसरी कहानी में लेखक की कल्पना का अद्भुत चमत्कार है। ग़दर के बाद—विजय और प्रति-हिंसा से अन्धे विदेशियों ने भारतीयों पर जो पाशविक अत्याचार किये, उनका रोंगटे खड़े कर देने वाला वर्णन है। तीसरी कहानी में एक साम्राज्य-विरोधनी संस्था के दो युवक-सदस्यों की अद्भुत, रहस्य-पूर्ण स्नेह कथा है। यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय के कलेजे में छुपकर रहने की चीज़ है। पढ़कर शरीर थर्रा उठेगा! दूसरा संस्करण! चार भयङ्कर चित्र! मोटा कागज़!! मूल्य सिर्फ़ एक रुपया। सजिल्द सवा रुपया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८-सत्याग्रह

(ऋषभचरण-लिखित)

आज क्या हो रहा है ? सारा भारतवर्ष एक महा-भयंकर उत्तेजना, एक असाधारण आग, एक जीवन और मृत्यु के घनघोर संग्राम में सना हुआ है !—आज देश का बच्चा-बच्चा 'मिटने या मिटाने' के भयानक संकल्प की पूर्ति में जुटा हुआ है !!—आज सदियों से पर्दे के वीभत्स पाप में सनी हुई भारत की रही-सही लाज हमारी हज़ारों माँ-बहनें पर्दे और व्यर्थ की भीरुता को लात मारकर 'सत्याग्रह'-संग्राम की धधकती हुई चिता में कूद पड़ी हैं !!!

और—?—और क्या हो रहा है ?? आज महा-पुरुष गाँधीजी और हमारे साठ हजार भाई धन-जन, माँ-बाप, और सांसारिक विषय-वासना को दूर फेंककर भारत की जेलों में साक्षात् नर्क-यातना का अनुभव कर रहे हैं, और क्रूर, स्वेच्छा-चारिणी गवर्नमेण्ट भयंकर दमन- अस्त्र को हाथ में लेकर नङ्गा नृत्य नाच रही है !—और अपनी प्रभुता को पशुता का अमली जामा पहना रही है !!

ठीक यही दक्षिण-अफ्रीका में हुआ था !—यही अशान्ति, यही अहिंसा-पूर्ण 'सत्याग्रह'-युद्ध, और दमन और पशुता का नङ्गा नाँच !—ठीक इसी प्रकार हजारों भारतीय जेलों में ठूँसे गये थे, सड़क पर चलते, ट्रामों में बैठे हुए भारतीय जान से मार डाले गये थे। स्त्रियों को जेल की कोठरियों में बन्द कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महा-भयानक कष्ट दिया गया था, और अन-गिनत भारतीय मजदूरों ने, अपमान और यातना से बिलबिलाकर काम छोड़ दिया था, और खुशी-खुशी जेल चले गये थे।

लगातार चौदह साल युद्ध चला। भारतीयों पर एक पशुता-पूर्ण 'काला क़ानून' लागू किया गया था। उसी के विरोध-स्वरूप यह संग्राम आरम्भ हुआ था। फिर कैसे, यह क़ानून रद्द हुआ, और कैसे संसार के सर्व-श्रेष्ठ महा-पुरुष गाँधीजी का अहिंसात्मक-सत्याग्रह-युद्ध सफल हुआ ?— यह हमारे 'सत्याग्रह' में पढ़िये।

काग़ज़, छपाई, सफ़ाई तो हमारे यहाँ की देश-प्रसिद्ध हो चुकी है! दाम सिर्फ़ १) सजिल्द १।) रु०

९-हड़ताल

(ऋषभचरण-लिखित)

कुछ जोशीली और फड़कती हुई राजनैतिक कहा- नियों का संग्रह! सभी कहानियाँ नये तर्ज की, प्रभाव- पूर्ण और मन में अद्भुत लहर पैदा कर देने-वाली हैं। पहली कहानी 'हड़ताल' में तो आप लेखक की कल्पना, सूझ और प्रतिभा को देखकर झूम उठेंगे। आजतक हिन्दी संसार में इस ढङ्ग कीकहा- नियों का संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। छपाई, सफ़ाई और गेट-अप के सम्बन्ध में तो कुछ कहना-ही बेकार है। मूल्य, वही एक रुपया सजिल्द सवा रुपया।

१०-जेल-यात्रा

छपने से पहले आर्डर रजिष्टर करा लीजिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री विश्ववि

हमारी कुछ अन्य पुस्तकें

२१ बनाम ३०

[आचार्य चतुरसेन शास्त्री—लिखित]

आज भारत धधकती भट्टी में चल रहा है। यह सन् १९३० का साल है। सन् १९२१ में भी ऐसी-ही भट्टी जली थी। इस २१ और ३० की भट्टी में क्या अन्तर है, और यह ३० की भट्टी कितनी अधिक भयानक है—इसका प्रत्यक्ष दर्शन करना हो, तो शास्त्रीजी की लौह-लेखनी की इस ताज़ी करामात में देखिये। भारत क्या था?—और क्या होगया?—दोनों हाथों से, क्रूरता-पूर्वक अंग्रेजों ने किस प्रकार इसे लूटा? राष्ट्रीय काँग्रेस और राष्ट्र-पति जवाहरलाल का क्या महत्व है?—यह सब इसी पुस्तक में है। इसके अतिरिक्त सारे संसार की अन्तर्राष्ट्रीय प्रगति का विद्वत्ता-पूर्ण आलोचन और भविष्य भी आप इस ग्रन्थ में पढ़ेंगे। कुछ अध्यायों के शीर्षक सुनिये—'पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा', 'जवाहरलाल नेहरू', 'गान्धी का बल', 'देश का वातावरण', 'भावी महायुद्ध'! साढ़े तीन सौ पृष्ठ, और दाम केवल डेढ़ रु०

सजिल्द १॥।) रु०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यभिचार

[आचार्य चतुरसेन शास्त्री—लिखित]

डरिये नहीं; नाम जैसा वीभत्स है, बात है नहीं। इसे ढ़कर आपके रोंगटे चाहे खड़े हो जायें, पर कुत्सित भावना-ों की गुञ्जायश नहीं है। बड़े-बड़े भयानक रोगों का वर्णन, ारण और निदान, बड़े मनोयोग-पूर्वक खूब ज़ोरदार भाषा लिखा गया है। भिन्न-भिन्न रोगों के तीन-सौ के लगभग ाजवाब नुस्खे देकर तो मानों सोने में सुगन्ध पैदा कर दी ई हैं। साहित्य के कुछ आलोचकों ने यद्यपि इस पुस्तक की ेन्दा की है, पर सच कहें, तो उन्हें यह अधिकार-ही नहीं था ह साहित्य की वस्तु न होकर एक चिकित्सा-ग्रन्थ है, और ेखक ने नवयुवकों की दिन-दिन गिरती हुई दशा से बिल-बिलाकर-ही इसे लिखा है। पढ़ते-पढ़ते कहीं समाज की -ग़ैरती और अन्धा-धुन्धी देखकर ज़हर खालेने को जी चाहता , कहीं अभागी युवतियों और दयनीय युवकों की दुर्दशा देख र तरस आता है, और कहीं देश के भविष्य की कल्पना कर, ोम-रोम खड़ा हो जाता है। लेखक कलेजा कँपा देने-वाली ाषा के लिये सुप्रसिद्ध है। आपकी यह रचना एक भीतरी उफान का फल है, और एक-एक पृष्ठ से जैसे आग की चिन-गारियाँ छूटती हैं। दाम सजिल्द का २।) रुपया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गऊ-वाणी

[ऋषभचरण लिखित]

गो-रक्षा की अनुपम पुस्तक है। हिन्दी-संसार में इस ढङ्ग की पुस्तक आज-तक नहीं निकली है। समस्त धर्म-शास्त्रों के उद्धरण देकर यह सिद्ध कर दिया गया है, कि उनमें कहीं भी गो-वध की आज्ञा नहीं दी गई है, और लोग उनकी अलङ्कारिक भाषा में उलझकर अर्थ का अनर्थ कर डालते हैं। कुरान, बाइबिल, तौरैत, ज़बूर-आदि धर्म-ग्रन्थों के विशिष्ट अंशों का चमत्कार-पूर्ण अर्थ किया गया है। गो-रक्षा के हामी हिन्दुओं को इसकी करोड़ों प्रतियाँ जातीय-विजातीय भाइयों में वितरण करानी चाहिये। समस्त पत्र-पत्रिकाओं ने मुक्त-कण्ठ से इसकी प्रशंसा की है। दाम ॥=)

हाहाकार

[आचार्य चतुरसेन शास्त्री-लिखित]

नाम जैसा रुलाने-वाला है, चीज़ भी वैसी-ही है। पुस्तक तो छोटी-सी है, पर चीजें एक-से-एक ला-जवाब है। शास्त्रीजी गद्य-काव्य, पद्य, और कहानी—सब-कुछ—लिखते हैं। इस छोटी-सी रचना में आप उनकी सब प्रकार की कृतिओं का रसास्वादन कर सकेंगे। ९६ पृष्ठ, सुन्दर रङ्गीन टाइटिल, और दाम केवल।) चार आना। शास्त्रीजी की सर्व-श्रेष्ठ रचना 'खूनी' इसी पुस्तक में मौजूद है। एक-एक शब्द पढ़कर आप का दिल बाँसों उछलेगा। आज-ही एक प्रति मँगा लीजिये।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति स्मृति संग्रह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ARCHIVES

R8 3,RIS-S

37363

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar